ॐ

श्री प्रभु कलिमल नाशन योग उद्धारण भक्त भयहारी
योगेश्वर योगावतार श्री महाप्रभु रामलाल के
शरणागत भक्तो के लिए

नित्य-कर्म

स्तुति, आरती, चालीसा, संकटमोचन स्तोत्र, हवन यज्ञ विधि,
अष्टोत्तरी माला, भजन कीर्तन आदि सहित तथा

नैमित्तिक-कर्म

प्रकाशक
योग साधन आश्रम, 3-माडल टाऊन,
होशियारपुर (पंजाब)

नवम् बार 2000

भेंट 11.00 रुपए

श्री प्रभु कलिमल नाशन योग उद्धारण भक्त
भयहारी योगेश्वर योगावतार श्री महाप्रभु
रामलाल के शरणागत भक्तों के लिए

नित्य—कर्म

स्तुति, आरती, चालीसा, संकटमोचन स्तोत्र, हवन यज्ञ विधि,
अष्टोत्तरी माला, भजन कीर्तन आदि सहित तथा

नैमित्तिक-कर्म

प्रकाशक

योग साधन आश्रम, 3-माडल टाऊन,
होशियारपुर (पंजाब)

नवम् बार 2000

भेंट : 11-00 रूपये

Published by :
C.L. Kapur,
Yog Sadhan Ashram,
3-L Model Town,
HOSHIARPUR.

चैत्र संवत 2050
मार्च सन् 1995
श्री रामलाल अब्द 107

Ninth Edition ... 2000
भेंट 11 रुपये

Printed by :
MADHU ART PRESS
418/5 Fatch Pura
Jalandhar.
Ph. 280535

हठ योग के सात साधन

1 षट कर्म
2 आसन
3 मुद्रा
4 प्राणायाम
5 प्रत्याहार
6 ध्यान
7 समाधि

राज योग के आठ अंग

1 यम
2 नियम
3 आसन
4 प्राणायाम
5 प्रत्याहार
6 धारणा
7 ध्यान
8 समाधि

पांच यम

1 अहिंसा
2 सत्य
3 अस्तेय
4 ब्रह्मचर्य
5 अपरिग्रह

पांच नियम

1 शौच
2 सन्तोष
3 तप
4 स्वाध्याय
5 ईश्वर प्रणिधान

विषय-सूची

क्रम सं.	प्रसंग		पृष्ट
1.	संक्षिप्त भविष्य वाणी	-	1
2.	श्री सद्गुरु स्तुति	-	2
3.	मंगलाचरणम्	-	3
4.	श्री महाप्रभु रामलाल जी की आरती	-	5
5.	श्री महाप्रभु रामलाल स्तोत्र	-	6
6.	विनय	-	7
7.	श्री महाप्रभु रामलाल भविष्य वाणी	-	8
8.	श्री महाप्रभु रामलाल चालीसा	-	19
9.	श्री महाप्रभु रामलाल का आना	-	28
10.	श्री महाप्रभु रामलाल संकट मोचन स्तोत्र	-	29
11.	श्री महाप्रभु रामलाल जी का हवन यज्ञ	-	34
12.	श्री महाप्रभु रामलाल अष्टोत्तरी माला	-	40
13.	नैमित्तिक कर्म	-	46
	(क) दीक्षा विधि	-	48
	(ख) वर्ष गांठ	-	50
	(ग) नामकरण संस्कार	-	51
	(घ) मुण्डन संस्कार	-	52
	(ङ) विवाह संस्कार	-	56
	(च) मृत्यु पर	-	70
	(छ) सामाजिक पर्व	-	72
	(ज) साप्ताहिक सत्संग	-	73
14.	श्री महाप्रभु रामलाल संकीर्तन	-	74
15.	आरती श्री 1008 प्रभु रामलाल जी महाराज की (अंग्रेज़ी में)	-	88
16.	Daily Prayer	-	90
17.	योग साधन आश्रम के नियम	-	91

योग वन्दना

योग – विद्यां नमाम्यहम्

सौंदर्यलहरीरूपां, तापत्रयविनाशनीम् ।
तेजस्विनीं तपोरूपां, योगविद्यां नमाम्यहम् ॥ 1 ॥
संस्थापकां समत्वं तां, शक्तिसर्जनकारिणीम् ।
चित्तवृत्तिनिरोधाय योगविद्यां नमाम्यहम् ॥ 2 ॥
अर्धनारीश्वरस्येमां, चैतन्यसार संभवाम् ।
पूर्णरूपकुण्डलिनीं, योगविद्यां नमाम्यहम् ॥ 3 ॥

●●●●

❋ योग तुझे नमस्कार ❋

सुन्दर करे जो देह को, करे दुखों से पार ।
तेज रूप तप रूप जो, योग तुझे नमस्कार ॥ 1 ॥
करे समत्व दान जो, शक्ति सिरजनहार ।
चित्तवृत्ति निरोधहित, योग तुझे नमस्कार ॥ 2 ॥
आदिनाथ से ऊपजा, चेतनता का सार ।
जागृत कुण्डली जो करे, योग तुझे नमस्कार ॥ 3 ॥
राम लाल जिस का किया, कलियुग में उद्धार ।
मुलखराज के "सेवक", का तुझे नमस्कार ॥ 4 ॥

चमनलाल कपूर "सेवक"

ओ३म् नमः श्री रामलाल प्रभुजी परब्रह्मणे नमः

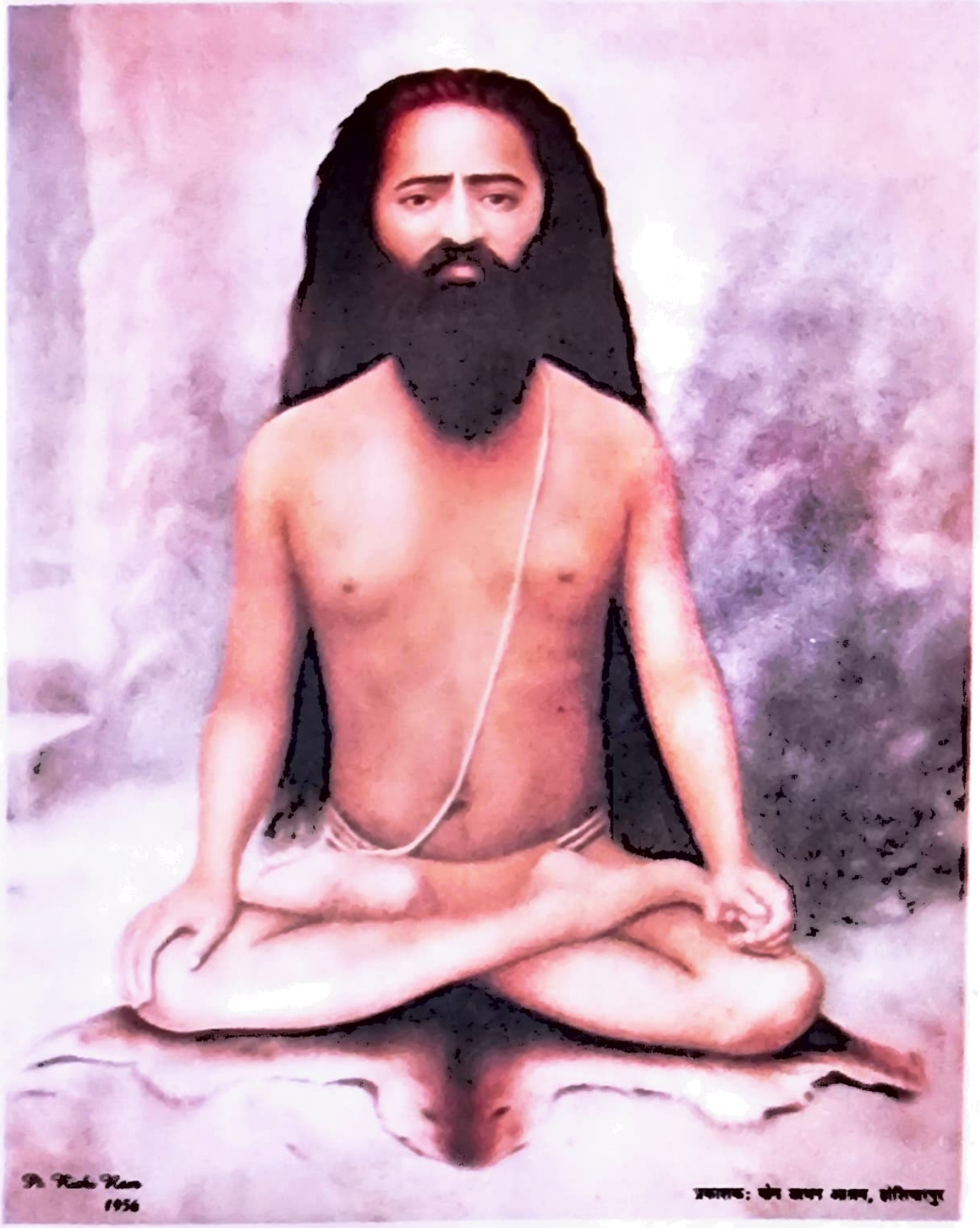

श्री श्री 1008 योगेश्वर प्रभु रामलाल जी महाराज

अनादि शक्ति, अनन्त कला सम्पन्न, महाप्रभु
श्री रामलाल जी के रूप में, अवतीर्ण होने के
सम्बन्ध में, महर्षि काकभुशुण्डी कृत, प्राचीन

1. संक्षिप्त भविष्य वाणी

" कलिकाल में, भारत के उत्तर पश्चिम प्रदेश, पंजाब राज्य के, अमृतसर नगर में, भाग्यशाली पण्डित, श्री गण्डाराम जी की सुधर्म पत्नी, अवतार जाया, श्री मती भागवन्ती जी के गर्भ से, सत्-चित्-आनन्दमयी, अनादि शक्ति, गुरुओं के गुरु, वा प्रभुओं के प्रभु, श्री रामलाल जी के, पार्थिव शरीर के रूप में, अवतीर्ण होगी। इक्कावन वर्ष की आयु में, यह शक्ति, अपने पार्थिव देह को, त्याग देगी, और मेरु गिरि के, स्वर्ण शिखिर पर, ईश्वरीय अविनाशी, पूर्णता के अभेद रूप में, वास करेगी। इसी शक्ति का तीसरा देह, प्राणिमात्र के उद्धार के लिए, कल्पांत तक, अनश्वर रहेगा। ये महापुरुष, जगत की आधारभूता, महाशक्ति के अवतार, वा सृष्टि स्थिति आदि, महाशक्ति सम्पन्न होंगे। "

महर्षि काक भुशुण्डी रचित कौमार नाड़ी ग्रन्थ से उद्धृत।

2. श्री सद्गुरु स्तुति

गुरु समान दाता नहीं, तीन लोक के माहिं।
सत् वस्तु वह बकसियो, जा को अन्त न आहिं॥ १॥
तुम दाता मैं मंगता, सद्गुरु देव दयाल।
योग प्रेम वर्षा करो, काटो सब जंजाल ॥ २॥
पिता से माता सौ गुणा, करती सुत से प्यार।
माता से हरि सौ गुणा, हरि से गुरु सौ बार ॥ ३॥
सात द्वीप नव खण्ड में, गुरु से बड़ा न कोय।
करता करे न कर सके, सद्गुरु करे सो होय ॥ ४॥
अठसठ तीर्थ गुरु चरण, परवी होत अखण्ड।
सहजो ऐसो धाम न, सकल अण्ड ब्रह्माण्ड ॥५॥
सब पर्वत स्याही करूं, घोरुं समुद्र मंझाय।
धरती का कागद करूं, सद्गुरु स्तुति न समाय ॥६॥
ऐसी कृपा प्रभु कीजिए, चरण कमल लिपटाय।
आठ पहर चौसठ घड़ी, श्वास न विरथा जाय ॥ ७॥
नाशवान संसार से, चित को देवो मोड़।
बहिर मुखी प्रवाह से, अन्तर को देवो जोड़ ॥ ८॥
सुरपति नरपति पतितगति, गण्डाराम के लाल।
गति मति के तुम अधिपति, करुणा सिन्धु दयाल ॥ ९॥
अजर अमर अशरण शरण, अविनाशी अविकार।
आदि प्रभु करुणायतन, विनवऊं बारं बार ॥ १०॥

॥ श्री सद्गुरुदेवाय परब्रह्मणे नमः ॥

3. मंगलाचरणम्

सुगौरवर्णं सुविशालनयनं,
योगिवरं सिद्धसिद्धेशदिव्यम्।
श्री भागवन्ती सुतसर्वश्रेष्ठं
श्री रामलालं शरणं प्रपद्ये ॥ १ ॥

अर्थ :- जो सुन्दर गौर वर्ण हैं और जिन के नयन बहुत विशाल हैं, जो श्रेष्ठ योगी तथा सिद्धों के भी सिद्ध दिव्य मूर्ति हैं, श्रीमती माता भाग्यवन्ती जी के उन सर्वश्रेष्ठ पुत्र श्री रामलाल जी की शरण में आता हूँ।

चिदानन्दरूपं अखिलविश्वनाथं
दिनेशं महेशं सुनेत्रं सुवर्णम्।
विभु विप्रवंशेश परमं प्रशान्तं
प्रभुरामलालं नमामि नमामि ॥ २ ॥

अर्थ :- चित् और आनन्द रूप, समस्त विश्व के स्वामी, सुन्दर नेत्रों वाले और सुन्दर वर्ण वाले सूर्य रूप, शिव रूप तथा सर्व व्यापक रूप, ब्राह्मणवँशेश, परम प्रशान्त श्री प्रभु राम लाल जी को मैं बार-बार नमस्कार करता हूँ।

नमो योगरूपं नमो ब्रह्मरूपं,
अनंतं अकायं अभेदं अनीहम्।
सदाबोधरूपं सकलव्याधिहरणं,
प्रभुरामलालं नमामि नमामि ॥ ३ ॥

अर्थ :- मेरा उन श्री राम लाल जी को बारंबार नमस्कार हो जो योगरूप, ब्रह्मरूप, अनन्त, अशरीरी, भेद रहित, निष्काम, अखण्ड ज्ञानरूप तथा (भक्तों के) समस्त दु:खों का हरण करने वाले हैं।

अजं निर्मलं मुलखराजस्वरूपं
सकलगुणनिधानं परमदिव्यवर्णम्।
प्रभो 'भृत्यवेज़र' त्वशरणं त्वशरणं
प्रभुरामलालं नमामि नमामि ॥ ४ ॥

अर्थ:- अजन्मे, निर्मल, श्री मुलख राज स्वरूप, समस्त गुणों के निधान, परम दिव्य वर्ण वाले श्री राम लाल जी को मैं नमस्कार करता हूं, नमस्कार करता हूं। हे प्रभो ! आप का यह सेवक 'बेज़र' निस्सहाय है। (इसे अपनी शरण में लें, शरण में लें)।

4. श्री महाप्रभु रामलाल जी की आरती

ऊँ जय सद्गुरुवर प्यारे, प्रभु जय सद्गुरुवर प्यारे।
योगीश्वर योगेश्वर, त्रिभुवन से न्यारे॥
ऊँ जय सद्गुरुवर प्यारे॥

जय कलिमल के हरता, जय अन्तर्यामी-प्रभु जी।
श्री रामलाल सर्वेश्वर, प्रभु जी सब के स्वामी॥
ऊँ जय सद्गुरुवर प्यारे॥

जय देवन के देवा, जय सुख की राशि-प्रभु जी।
श्री गंडा राम सुत निर्मल, जय प्रभु जी अविनाशी॥
ऊँ जय सद्गुरुवर प्यारे॥

जय निर्गुण गुणवन्ता, जय पूरण सन्ता-प्रभु जी।
ब्राह्मण कुल के सूरज, जय जय भगवन्ता॥
ऊँ जय सद्गुरुवर प्यारे॥

जय मुक्ति के दाता, जय भक्तन प्यारे-प्रभु जी।
श्री मुलखराज के भीतर, प्रभु जी वर उजयारे॥
ऊँ जय सद्गुरुवर प्यारे॥

जय सुख सदन दयालो, जय करुणा सागर-प्रभु जी।
तव चरणन की धूरी, चाहे यह सेवक॥
ऊँ जय सद्गुरुवर प्यारे॥

आरती यह प्रभु जी की, जो कोई नर गावे-प्रभु जी।

सुफल होंय सब कारज, वह मुक्ति पावे॥
ऊँ जय सद्गुरुवर प्यारे॥

5. श्री महाप्रभु रामलाल स्तोत्र

विप्रकुलरवि तिमिर नाशन, अघहरण योगीवरम्।
सकल कलिमल के विनाशक, परम सुन्दर ईश्वरम्।
श्री गंडाराम के सुत दयालो, करुणामय करुणाकरम्।
गौरवर्ण सुनेत्रमनहर, श्री रामलाल नमाम्यहम्।
परम प्रिय प्रभु जी सिद्ध जन के, योगबल पूरण हरे।
सर्वजगदाधार स्वामी, भक्त भव सागर तरे।
तव शरण में आय कर, फिर नर नहीं जन्मे मरे।
रोग शोक न निकट आवत, भक्त के संकट टरे।
ज्ञान सदन प्रकाण्ड ज्योतिषि, गणित फलित विशारदम्।
सकलशास्त्रन कोविदं प्रभु जी, नौमी श्री पण्डितवरम्।
चतुर युगन के दोष हरता, सकल जगत के कारणम्।
सकल गुरुजन के गुरु, प्रभु जी रामलाल नमाम्यहम्।
प्रभु विराजत मुलख घट में, अजर अमर अनामयम्।
चार[1], षट[2], और आठदश[3], गुण गावते निशिवासरम्।
राम रूप अनूप भूपति, कृष्ण रूप भवेश्वरम्।
श्री मुलख राज के रूप में, प्रभु रामलाल नमाम्यहम्।

1. चार वेद 2. छः शास्त्र 3. अठारह पुराण

सब से सुन्दर योग मारग, जिमि कमल को दिवाकरम्।
स्वाति बून्द है चात्रकन को, कुमुदिनी को निशाकरम्।
मुक्ति भुक्ति के परम दानी, हितकरं अति सुन्दरम्।
स्वामी सेवक दीन के, प्रभु जी राम लाल नमाम्यहम्।

6. विनय

त्वमेव माता च पिता त्वमेव।
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव।
त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥ १ ॥

अर्थः- हे प्रभो! आप ही मेरी माता हैं, मेरे पिता हैं, मेरे बन्धु हैं और मेरे सखा हैं। हे देव! आप ही मेरी विद्या हैं, मेरा धन हैं और मेरे सर्वस्व हैं।

मूकं करोति वाचालं पंगुं लंघयते गिरिम्।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम्॥ २ ॥

अर्थः- मैं उन परमानन्द स्वरूप श्री प्रभु जी को नमस्कार करता हूं जिनकी कृपा मूक (गूंगे)पुरुष को वाचाल (वक्ता) बना देती है और पंगू (लँगड़े) को पर्वतशिखरों पर चढ़ा कर पार करवा देती है।

शील क्षमा दयागुण सागर जामे रूप अपार।
सभी देव दर पर रहें होवे नमो बारंबार ॥ ३ ॥

श्री महाप्रभु रामलाल अवतार सम्बन्धी

7. भविष्य वाणी

पाठ का विधान

श्री योगेश्वर महाप्रभु राम लाल जी महाराज के कलियुग में अवतार लेने के सम्बन्ध में काकनाड़ी संहिता में महर्षि काकभुषुण्डी ने त्रेतायुग में भविष्यवाणी की थी।

यह भविष्यवाणी, जैसे आगे दी है, दो भागों में लिखी है। इसमें श्री प्रभु जी के जीवन और उनकी शक्तियों का साररूप से उल्लेख है।

नित्यप्रति आरती के पश्चात् भविष्यवाणी के एक भाग अथवा दोनों भागों का पाठ भक्तों को करना चाहिए। पाठ करते समय चित्त में श्री प्रभु जी के स्वरूप को बनाये रखना आवश्यक है।

ॐ परब्रह्म श्री राम लालाय नमः

भविष्य वाणी

श्री करुणासिंधु परब्रह्म पूर्ण अवतार महाप्रभु
श्री पं० रामलाल जी महाराज के सम्बन्ध में कौमार
नाड़ी ग्रन्थ में महर्षि काक भुशुण्डी द्वारा लिखित

मद्रास नगर रायपेट स्थित कौमार नाड़ी ज्योतिषालय के काक भुशुण्डीकृत काक नाड़ी नामक संहिता में लिखा हुआ श्री अनंत कोटि आनंद कंद सद्गुरु देव श्री प्रभुओं के प्रभु ब्राह्मण कुलावतंस श्री पं० राम लाल जी का जातक फल।

१. **महर्षि श्री काक भुशुण्डी जी कहते हैं कि अण्ड पिण्ड ब्रह्मांड को गर्भ में धारण करने वाली हे देवी! एक महापुरुष का जातक फल मैं कह रहा हूँ। वृषभ लग्न है, द्वितीय भाग में चन्द्र है, कर्काटक में शनि राहु हैं, तुला में कुज है, वृश्चिक में बृहस्पति है। मीन में रवि है। मकर में केतु है, कुम्भ में बुध वा शुक्र हैं। इस प्रकार की ग्रह स्थिति में जन्म है।**

२. **जगत की रक्षा के लिये अवतार लेने वाले महापुरुष हैं। जन्म भूमि पंजाब है। वह नगर भी किसी समय**

प्रसिद्ध राजधानी रूप से प्रकट होगा, उस का इतिहास भी महान है। उसका नाम अमृतसर होगा। पूर्व पश्चिम वीथी है। उत्तराभिमुख सिंह द्वार का गृह है। पंचम गर्भ में जन्म है।

३. जीवों को लोक परलोक का ऐश्वर्य देने में समर्थ महाप्रभु हैं। अष्ट सिद्धियों के स्वामी हैं। सभी प्रकार की सिद्धि शक्तियों के अधिपति हैं। सांसारिक जीवों के प्रारब्ध को अपने ऊपर लेकर तथा भुगत कर उनको भी अपनी पदवी दे देने में सहायक महापुरुष हैं। यह विषय आगामी भागों में विस्तृतवर्णन करेंगे।

४. आपका नाम श्री राम लाल है। पैतृक सम्पत्ति अधिक नहीं, समस्त विश्व को ऐश्वर्य देने में समर्थ प्रभु को पैतृक वैभव से क्या प्रयोजन है? पैतृक ऐश्वर्य के अधिक रहने से इन को प्रयोजन भी क्या है?

५. पिता जी का नाम श्री गंडाराम है। आपकी बीस वर्ष की आयु के भीतर पिता का स्वर्गवास है। तीस वर्ष की आयु के भीतर माता जी का स्वर्गारोहण होगा। माता जी का नाम श्रीमती भागवन्ती है।

६. पिता के देहावसान के पश्चात गृह त्याग कर तथा दूरस्थ देशों में जाकर बड़ों का अनुग्रह प्राप्त कर

ज्ञान ज्योति अभेद व्यापक स्वरूप के दर्शन प्राप्त होंगे।

७. पन्द्रह वर्ष की आयु होने पर विवाह होगा। पत्नी के बालकौर व सुभद्रा यह दोनों नाम हैं। माता पिता के विशेष अनुरोध से ही यह विवाह होगा, फिर भी छिलके के साथ रहकर इमली की भांति निर्लेप ही रहेंगे। (कमलपत्रमिवांभसः) इस प्रकार भी थोड़ा समय व्यतीत करके अन्य देशों की ओर प्रस्थान करेंगे। उस अल्प काल में भी सन्तानोत्पत्ति की ओर ध्यान न होगा।

८. ईश्वर कृपा अधिक रहेगी। बड़े-बड़े अनुभवी सिद्धों को भी होने वाले सन्देहों को निवृत्त करने की असाधारण योग्यता को प्राप्त होंगे। ऐसी महान योग्यता बीस वर्ष की आयु के भीतर ही प्राप्त होगी।

९. ऐसी महान योग्यता के साथ अनेक स्थानों में भ्रमण करेंगे। इतने में तीस वर्ष की आयु होने पर माता जी का स्वर्गारोहण होगा। माता जी के देहावसान के समय सभी सिद्धियां प्रकट होंगी। ज्ञानोपदेश करते हुए अनेक स्थानों में पदार्पण करेंगे।

१०. अन्य जीवों को ज्ञानोपदेश द्वारा कृतार्थ करने वाले गुरुओं के भी गुरु होकर उनकी योग्यता अनुसार गुरु शक्ति प्रदान करते रहेंगे। सृष्टि स्थिति आदिक महाशक्ति सम्पन्न हैं। मुँह मांगा वरदान देने में भी पूर्ण समर्थ हैं।

११. ये महापुरुष जगत की आधारभूता महाशक्ति के अवतार हैं। इन का चरित्र अपार है। द्वितीय भाग में विस्तार पूर्वक कहा जायेगा।

१२. सदा सर्वथा निर्विकल्प में स्थित रहते हुए इक्कावन वर्ष की आयु में भौतिक शरीर त्याग कर द्वितीय तन धारण कर मेरु गिरि के स्वर्ण शिखर में रह कर इससे भी अधिक उन्नत स्थिति प्राप्त कर फिर दूसरा शरीर धारण कर कल्पांत तक यह इसी स्थिति में विराजेंगे। ऐसी उत्तम स्थिति इस महापुरुष में नित्य रूप में रहेगी।

❖❖❖❖

इति प्रथम भाग सम्पूर्णम्

अथ द्वितीय भाग प्रारम्भ

१. ईड़ा पिंगला मध्यस्थ परमानन्द पीठ में रहने वाले कृपा सागर सर्व व्यापक अथवा सर्व जगत के रूप में प्रकट होने वाले उत्तम भक्तों के मन सरोज में उपस्थित ज्योति रूप, आदि अन्त रहित परमेश्वर की प्रार्थना कर यथार्थ नित्य में सर्वदा स्थित एक महापुरुष के जातक फल में द्वितीय भाग कथन करता हूँ। काक भुशुण्डी महर्षि इस प्रकार कथन करते हैं।

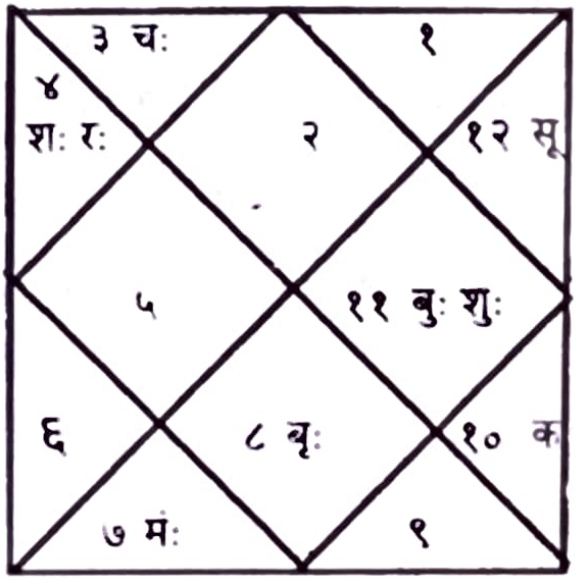

जन्म कुण्डली

श्री योगेश्वर महाप्रभु पं० रामलाल जी महाराज

२. इस प्रकार की ग्रह स्थिति में सर्वधारी नामक वर्ष में चैत्र शुक्ला नवमी गुरुवार में पुनर्वसु नक्षत्र युक्त वृषभ लग्न सूर्योदय के अनन्तर ६ घ० ५६ प० पर इन का जन्म

होगा। इनका शुभ नाम श्री रामलाल है। पिता जी का नाम पं० गण्डाराम है तथा माता का नाम श्रीमती भागवन्ती जी है।

३. इन के जन्म के पश्चात् प्रथम अढ़ाई वर्ष के भीतर अपने तथा जननी के तन में साधारण अस्वस्थता के पश्चात् स्वस्थ होकर परिवार में सुख का संचार होगा। इन के कारण माता पिता का नाम यावत् चन्द्रदिवाकरौ अर्थात् सदैव काल के लिये प्रसिद्ध होगा। इससे अधिक माता पिता का और क्या सौभाग्य होगा।

४. इसके पश्चात् अढ़ाई वर्ष में बालेन्दु की भांति दिन-प्रति-दिन ओजपूर्ण होंगे। उस समय कौन जान सकेगा कि इनका भविष्य कितना महान है। यह समझ न आने वाले उस समय में विद्याध्ययन पांच वर्ष की आयु में होगा। सहोदर वृद्धि के साथ कुटुम्ब सौख्य भी उन्नत होगा।

५. पश्चात् अढ़ाई वर्ष में जैसे मधु की ओर मधुप की प्रवृत्ति सहज है उसी प्रकार सत्य स्वरूप की ओर इनकी वृत्ति इस अल्प आयु में ही प्रविष्ट होगी तथा भविष्य के लिए आवश्यक अनुकूल प्रवृत्ति के साथ अनुभव आरम्भ होगा।

६. ऐसे महापुरुष के पारिवारिक विषय कथन करने का क्या प्रयोजन है ? दस वर्ष की आयु के भीतर (जैसे माता पार्वती ने दक्षिण के ज्ञान सम्बन्ध मूर्ति नामक महापुरुष को अमृत पिला कर कृतार्थ किया था उसी प्रकार इनको भी) दैवी कृपा प्राप्त हो कर तत्वार्जन में इनकी बुद्धि प्रवृत्त होगी।

७. छोटी आयु से ही माता पिता के अधीन न हो कर स्वतन्त्र व्यक्ति की भांति रहेंगे। माता पिता की दृष्टि में केवल ऊधमी बालक की भांति रहेंगे।

८. इसके पश्चात् अढ़ाई वर्ष में स्वयं भगवान ही गुरु रूप में आकर उपदेश देंगे। तब से वैराग्य, संशय निवृत्ति अनुभव प्राप्त होंगे। ऐसी अवस्था माता पिता को कष्टप्रद रहेगी। इस कारण बाद के अढ़ाई वर्ष में माता पिता किसी प्रकार इनको निर्बाधित कर विवाह करके संसार बन्धन लगाते हैं। धर्मपत्नी के बालकौर तथा सुभद्रा दो नाम हैं। विवाह के पीछे भी प्रथम की भांति गुरु उपदेश के समय जो कुछ भगवान ने आज्ञा दी थी उस आज्ञा के अनुसार योग प्रवृत्ति तथा तपस्या में लगे रहेंगे।

९. धर्मपत्नी की उपस्थिति में भी इमली जैसे छिलके के साथ रहती हुई भी पृथक है इस प्रकार निर्लेप हो कर

साँसारिक जीवन व्यतीत करेंगे। इस कारण माता पिता के हृदय का क्लेश बढ़ कर उनके शरीर का स्वास्थ्य न्यून होने लगेगा। इतने में पिता का स्वर्गवास होगा। शुभाशुभों के होते हुए भी बड़ों का सत्संग तथा अनेक पुण्य स्थानों की यात्रा प्राप्त होगी।

१०. पीछे अढ़ाई वर्ष में तपःस्थान में अधिकारी महापुरुषों की सन्निधि प्राप्त होगी। अनेक मनुष्य इनके आश्रित हो कर सेवा करने लगेंगे। अधिक जीवों को ज्ञानोपदेश करते हुए अनेक स्थानों में भ्रमण करेंगे।

११. पश्चात् के अढ़ाई वर्ष तक इनकी ख्याति अधिक होगी और गृहस्थ के सम्बन्ध को त्याग कर विशेष वैराग्य के साथ भ्रमण करेंगे।

१२. फिर अढ़ाई वर्ष में माता का तन अस्वस्थ रहेगा। तपस्या में विशेष सिद्धि प्राप्त होगी। उस सिद्धि के प्रभाव से अपने को छोड़, दूसरों को भी महान उपयोग व महान लाभ होगा। इतने में माता जी स्वर्गवास करेंगी।

१३. माता के स्वर्गारोहण के पश्चात् सन्मार्ग में विशेष अनुकूलता बढ़ेगी। अधिकाधिक सन्मान तथा अधिकाधिक पूज्यता बढ़ेगी। अब से निर्विकल्प समाधि का अभ्यास करेंगे। भूमि तथा जल में भी समाधि का

अनुभव करेंगे। सत् कीर्ति विशेष बढ़ेगी।

१४. फिर अढ़ाई वर्ष में इस प्रकार अभ्यास करके अष्ट सिद्धियों को प्राप्त होकर ईश्वर साक्षात्कार को प्राप्त होंगे।

१५ पश्चात् के अढ़ाई वर्ष में महिमा पहले से भी अधिक विकसित होगी। एक ही समय में अनेक स्थानों पर प्रकट होने की शक्ति को प्राप्त होंगे।

१६. फिर के अढ़ाई वर्षों में इस प्रकार की सिद्धियाँ विशेष रूप से बढ़ेंगी। सर्व भूतों में आत्मा को तथा आत्मा में सर्व भूतों को देखेंगे। सर्व व्यापक होकर रहने के सामर्थ्य को प्राप्त होंगे। आहार व निद्रा के बिना अजगर की भाँति आत्माराम प्रकाशित रहेंगे।

१७. बाद के अढ़ाई वर्ष में प्रथम शरीर छोड़ कर द्वितीय नूतन योग तन कल्पित कर के धारण करेंगे। ऐसी महा सिद्धि में निपुणता प्राप्त करेंगे।

१८. फिर के अढ़ाई वर्ष में अयोनिसंभव शरीर में प्रविष्ट होंगे।

१९. इस प्रकार अनेक स्थानों में योग शरीर से भ्रमण करेंगे।

२०. पीछे के अढ़ाई वर्ष में शरीर को बहुत बार छोड़ कर स्वेच्छा से बहुत से शरीरों में प्रवेश कर लौटने की महा सिद्धि से युक्त हो प्रकाशित रहेंगे।

२१. इस प्रकार लोक पूज्य हो कर फिर के अढ़ाई वर्ष में काय व्यूह नामक महा सिद्धि से युक्त हो रहेंगे। एक शरीर से अनन्त शरीरों को तथा अनेक शरीरों से एक शरीर को स्वेच्छा से धारण करते रहेंगे। अदृश्यत्व सिद्धि से युक्त होंगे। छुरी से भी न खण्डित होने वाला शरीर होगा।

२२. पश्चात् के अढ़ाई वर्ष तक इस प्रकार की दिव्य शक्तियाँ तथा योग सिद्धियां लोक में प्रकट करेंगे।

२३. इक्कावन (५१) वर्ष में शरीर त्याग की लीला संसार को दिखा कर द्वितीय दिव्य शरीर से हिमालय पर्वत तथा अन्य स्थानों पर भ्रमण करते रहेंगे। परमेश्वर में व इनमें कोई भेद नहीं है।

२४. इसके पश्चात् नवग्रह इन पर अपना प्रभाव बिल्कुल नहीं दिखा सकेंगे। श्रद्धा भक्ति से अपना ध्यान करने वालों पर सदैव कृपा दृष्टि रखेंगे। इस से अधिक इस महापुरुष के प्रति मैं क्या कह सकता हूँ। हे माता पार्वती! इस प्रकार काक भुशुण्डी जी कहते हैं जब तक सूर्य चन्द्र हैं तब तक यह महापुरुष इसी प्रकार कल्पांत तक प्रकाशित रहेंगे।

❖❖❖❖

इति द्वितीय भाग सम्पूर्णम्

॥ ॐ ॥

श्री गुरुदेवाय नमः

8. श्री महाप्रभु रामलाल चालीसा

॥ दोहा ॥

चिदानन्द पावन परम, रामलाल सुखधाम।
जगतारण कारण प्रभु, कलियुग के प्रभु राम॥
जिनकी चरण सरोज रज, करे पाप का नाश।
तिन के चरण सरोज की, निशिदिन बेज़र आश॥

॥ चौपाई ॥

श्री प्रभु रामलाल हितकारी, श्री प्रभु रामलाल पापारी।
श्री प्रभु रामलाल गुणधामा, श्री प्रभु रामलाल शुभनामा।
श्री प्रभु रामलाल भगवन्ता, श्री प्रभु रामलाल वर सन्ता।
श्री प्रभु रामलाल सर्वेशा, श्री प्रभु रामलाल अखिलेशा।
श्री प्रभु रामलाल अविनाशी, श्री प्रभु रामलाल सुखराशी।
श्री प्रभु रामलाल जग करता, श्री प्रभु रामलाल दुखहरता।
श्री प्रभु रामलाल योगीश्वर, श्री प्रभु रामलाल जगदीश्वर.
श्री प्रभु रामलाल धर्मात्मा, श्री प्रभु रामलाल परमात्मा।

॥ दोहा ॥

योग रूप योगी परम, योगारूढ़ अनन्त।
रामलाल त्रिभुवनपते, सन्त उदार महन्त॥
श्री प्रभुवर कलिमल हरण, सकल चराचर नाथ।
तव चरणान में प्रेम से, झुके भक्त का माथ॥

॥ चौपाई ॥

योगिराज विश्व के मालिक, योगिराज जगत के पालक।
योगिराज दया के सागर, योगिराज सकल गुण आगर।
योगिराज मुनीश्वर प्यारे, योगिराज जगत से न्यारे।
योगिराज पाप तम हारी, योगिराज कोटि रविधारी।
योगिराज कलि के उजयारे, योगिराज तम नाशन हारे।
योगिराज वेद के करता, योगिराज सकल अघ हरता।
योगिराज दुःखहरण दयालो, योगिराज सुखसिंधु कृपालो।
योगिराज निर्मल अकलंका, योगिराज साकार अशंका।

॥ दोहा ॥

श्री प्रभु ब्राह्मण कुल रवि, मन कमलन के मीत।
निराकार साकार प्रभु, निर्गुण सगुण अतीत॥
जड़ चेतन में आप की, एक शक्ति दरसाय।
जलचर थलचर व्योमचर, निशिदिन गुण तव गाय॥

॥ चौपाई ॥

जय जय नाथ विश्व के भूपा, अक्षर चतुर अपार अनूपा।
जय जय नाथ त्रिदोषन हंता, परम सुजान सुसेव्य सुसंता।
जय जय नाथ अगुण गुणवाना, भक्तन भयहारी भगवाना।
जय जय नाथ योग के प्यारे, शान्तिरूप दुःख भंजन हारे।
जय जय नाथ सुखन की राशि, अजर अमर योगी अविनाशी।
जय जय नाथ दीन के भ्राता, सकल चराचर के पितु माता।
जय जय नाथ सकल गुणधामा, सकल कलानिधि पूर्णकामा।
जय जय नाथ विश्व मन हरता, संहरता पालक वर करता।

॥ दोहा ॥

चार युगन में आपके, हे प्रभु अक्षर चार।
चार पदार्थ देत हैं, जानत है संसार॥
चार युगन में आपकी, महिमा ऋषि मुनि गांय।
चारों अक्षर जपत हैं, चारों दिशि सुख पांय॥

॥ चौपाई ॥

जो जन शरण आप की आवे, यम का त्रास न उसे डरावे।
शरण आपकी सुन्दर नैय्या, नाम आपका चतुर खवैया।
जो श्रद्धा से करत सवारी, भव तर जाये भक्त नर नारी।

कल्प वृक्ष सम नाम तिहारा, मन वाँछित सुख देवन हारा।
सकल सुखों के दाता स्वामी, दीन बन्धु प्रभु अन्तर्यामी।
दुख नाशन सबके पितु माता, अघ नाशन सब सुख के दाता।
देवी देव आपको ध्यावें, तव चरणन में शीश झुकावें।
श्री प्रभु रामलाल योगीश्वर, जगतारण कारण जगदीश्वर।

॥ दोहा ॥

जो सुख लोकालोक के, सभी आप के हाथ।
एक दया की दृष्टि से, कर दो नाथ सनाथ॥
नहीं विद्या नहीं बाहुबल, नहीं धन बल कुछ मोर।
इस बेज़र पर चाहिए, एक अनुग्रह तोर॥

॥ चौपाई ॥

योग सिद्धि से सब सुख देते, योग सिद्धि से दुख हर लेते।
योग सिद्धि से पार उतारें, योग सिद्धि से कलिमल टारें।
योग सिद्धि से व्याधी हरते, योग सिद्धि से झोली भरते।
योग सिद्धि से बल के दाता, योग सिद्धि से भय के त्राता।
योग सिद्धि से पाप विनाशी, योग सिद्धि से दें सुख राशि।
योग सिद्धि से अमर बनाते, योग सिद्धि से मोक्ष दिलाते।
योग सिद्धि से सिद्ध बनावें, योग सिद्धि से राज्य दिलावें।
योग सिद्धि से हरें त्रिताप, योग सिद्धि से हरते पाप।

॥ दोहा ॥

योग सिद्धि से करत हैं, भक्त जनन के काज।
योग सिद्धि से देत हैं, प्रभु त्रिभुवन का राज॥
योग सिद्धि से करत हैं, योगिराज उपकार।
योग सिद्धि से करत हैं, बन्द नरक के द्वार॥

॥ चौपाई ॥

जो जन शरण आपकी आया, तिस नर नारी ने सुख पाया।
जिस जिस नाम प्रभु का लीना, उसको अमरधाम प्रभु दीना।
कोई न गया द्वार से खाली, हैं प्रभु दीन दुनी के वाली।
कृपा करो मुझ पर अब स्वामी, कष्ट हरो प्रभु अन्तर्यामी।
क्षमा करो प्रभु अवगुण मोरे, गुणावाद गाऊँ मैं तोरे।
दुखी होय तव शरण में आया, मुझको कलिमल अधिक सताया।
और ठौर कोऊ नज़र न आवे, एक द्वार तुमरा दरसावे।
कोई न जावे गंग से प्यासा, मैं हूँ नाथ आपका दासा।

॥ दोहा ॥

नैनों से आंसू बहें, दुख सागर दुख देत।
तात मात पितु बाहु बल, सुधि कोई नहीं लेत॥
हे प्रभु! डूबा जात हूँ, भव सागर के बीच।
श्वास न लेने देत है, मोह माया की कीच॥

॥ चौपाई ॥

जिस पर नाथ अनुग्रह तोरा, मुक्त वही यह निश्चय मोरा।
मुलखराज पर कृपा तिहारी, आप ने दी इनको सरदारी।
आपने कल्प वृक्ष यह लाया, इनको निज आसन बैठाया।
दिव्य ज्योति प्रभु इनको दीनी, पूर्ण दया इन्हीं पर कीनी।
राज मुलख का इनको दीना, परम अनुग्रह मुलख पै कीना।
तव दर्शन की जिनको आशा, देखें मुलख न जायें निराशा।
जो प्रभु रामलाल के प्यारे, आयें वे मुलखराज के द्वारे।
जो कुछ मन में धार के आवें, वही कुछ मुलखराज से पावें।

॥ दोहा ॥

कलियुग के तारक प्रभु, रामलाल अवतार।
मुलखराज को दे दिए, श्री प्रभु ने अधिकार॥
प्रभु के सदृश मुलख हैं, जान लेहु सब मीत।
प्रभु प्रसन्न होंगे सदा, गाओ मुलख के गीत॥

॥ चौपाई ॥

योगिराज मुलख प्रभु रूपा, एक रूप जिमि जल और कूपा।
स्वर्णहार में स्वर्ण समाया, तिमि प्रभु मुलखराज में आया।
प्रभु में मुलख में भेद न कोई, प्रभु की कृपा से ज्ञान यह होई।
प्रभु की दया मुलख ने पाई, निज स्वरूप दीनी प्रभुताई।

अति सूक्ष्म बुद्धि जो पावे, उसको एकता यह दरसावे।
भेद भाव जो नर अपनाते, वे प्यासे गंगा से जाते।
परब्रह्म प्रभु अन्तर्यामी, मुलख में देखो सब के स्वामी।
जिमि गोपों ने कृष्ण न जाने, समय चूक पाछे पछताने।

॥ दोहा ॥

पुत्र सदा जानत रहे, नन्द यशोदा मात।
अर्जुन जाने मित्र वर, परब्रह्म नहीं जात॥
तैसे श्री प्रभु मुलख जी, नहीं निज को प्रकटाय।
भक्तन को यह चाहिये, समय न वृथा गवांय॥

॥ चौपाई ॥

प्रभु का रूप मुलख को जानो, मोरा कहा सत्य कर मानो।
कहे तुलसी यह कर विश्वासा, राम ते अधिक राम के दासा।
प्रभु की ज्योति मुलख में प्यारी, सत्य कहूँ सुन लो नर नारी।
जो कुछ स्वप्न में प्रभु फरमाया, वह कुछ कविता में मैं गाया।
गंडा राम दुलारे प्यारे, देवी दास नैन उजियारे।
एक ज्योति दोनों में भाई, सत्य कहूँ मिथ्या नहीं राई।
भक्ति अनन्य जो नर अपनावें, वे नर कष्ट कबहूँ नहीं पावें।
रामलाल से 'रा' अपनावो, मुलखराज से 'म' को पावो।

॥ दोहा ॥

'रा' और 'म' दोनों मिलें, बन जाता तब 'राम'।
दोनों का अक्षर प्रथम, करता पूर्ण काम॥
इस कारण भक्तो सुनो, एक जान लो रूप।
राम लाल श्री मुलख जी, एक हैं परम अनूप॥

॥ चौपाई ॥

श्री प्रभु रामलाल बलिहारी, श्री प्रभु मुलखराज मैं वारी।
श्री प्रभु रामलाल वर स्वामी, श्री प्रभु मुलखराज शुभनामी।
श्री प्रभु रामलाल जगकरता, श्री प्रभु मुलखराज दुख हरता।
श्री प्रभु रामलाल सर्वेशा, श्री प्रभु मुलखराज अखिलेशा।
श्री प्रभु रामलाल भयहारी, श्री प्रभु मुलखराज पापारी।
श्री प्रभु रामलाल पितुमाता, श्री प्रभु मुलखराज भयत्राता।
श्री प्रभु रामलाल रखवारे, श्री प्रभु मुलखराज उजयारे।
श्री प्रभु रामलाल भगवन्ता, श्री प्रभु मुलखराज वर संता।

॥ दोहा ॥

दोनों एक स्वरूप हो, मुलख और प्रभु राम।
'बेज़र' के पूर्ण करो, दास जान कर काम॥
जो नर श्रद्धा प्रेम से, यह चालीसा गात।
ऋद्धि सिद्धि पाता वही, भव सागर तर जात॥

॥ चौपाई ॥

जो चालीसा प्रतिदिन गावे, वह मुंह मांगे वर को पावे।
पुत्र हीन पुत्रन मुख धोवे, रहे प्रसन्न कबहूँ नहीं रोवे।
निर्धन प्राणी धन को पाता, जो निशिदिन चालीसा गाता।
यह चालीसा रोग मिटावे, जो गावे सो अति बल पावे।
यह चालीसा सुन्दर प्यारा, ऋद्धि सिद्धि का यह भण्डारा।
जो चालीसा गावत नारी, कबहूँ न विधवा होए विचारी।
अटल सुहाग होत है तिसका, यह चालीसा प्यारा जिसका।
यह चालीसा विद्या देवे, मूर्खता को यह हर लेवे।

॥ दोहा ॥

यह चालीसा प्रेम से, जो गावे निष्काम।
आवागमन मिटात हैं, उस नर का प्रभु राम॥
राम मुलख के चरण में, 'सेवक' शीश झुकाय।
कविता की वीणा मधुर, द्वारे आन बजाय॥

❖❖❖❖

समाप्तम्

9. श्री महाप्रभु रामलाल का आना

(योगेश्वर श्री १००८ स्वामी मुलखराज जी महाराज का प्रिय भजन)

प्रभु आना तोरा युग - 2 अन्दर,
अपने किए कौल इकरार बदले।
बदले सूरज चांद जमीन बेशक,
पर तेरा न कौल इकरार बदले।
नाथ नाम तोरा तारे पत्थरों को,
बान्धा पुल था रावण के पाप बदले।
दिया राज विभीषण को धर्म कारण,
निभाया पिता का वचन न राम बदले।
भीलनी - 2 पुकारदे राम आये,
खाये बेर जूठे केवल प्रेम बदले।
महावीर जी को प्रेम दान दीना,
फोड़ा छाती को राम दिदार बदले।
आओ सिखिये मिल सब प्रेम करना,
आये राम हैं योग करान बदले।
प्रेम राम को प्यारा है प्राण मानिद,
प्राण वारिये राम दिदार बदले।
सेवा राम दी आज्ञा विच रहना,
'मुलख' मंगदा दान निभान बदले।

10. श्री महाप्रभु रामलाल संकट मोचन स्तोत्र

॥ दोहा ॥

दीन बन्धु दाता पिता, पावन परम अनूप।
कृपा करो करुणा निधे, अखिल विश्व के भूप।
सर्वेश्वर गुरु जन गुरु, प्रभु जन के प्रभु नाथ।
सेवक के शिर पर धरो, निज करुणा के हाथ।

॥ चौपाई ॥

हे नाथ विप्रकुल मार्तण्ड, हे तम नाशन प्रभु उजयारे।
हे गंडाराम सुत परमोज्वल, हे भागवन्ती नैनन तारे।
हे शिव ब्रह्मादिक के स्वामी, हे देवन देव महा देवा।
प्रभु सनकादिक से सेवित हो, कर से बांटें मुक्ति मेवा।
हैं रिद्धि सिद्धि तव चर्णन में, और अखिल विभूति के स्वामी।
कहें शारद नारद इन्द्रादिक, हो नमस्कार अन्तर्यामी।
नहीं अन्य आपके सदृश जो, हम किससे देवें उदाहरण।
हे संकट मोचन आप हरो, इस भव में मेरा जन्म मरण।

॥ दोहा ॥

चरण कमल वर आपके, मो मन भ्रमर समान।
कृपा करो निशिदिन करे, अमिय मधुर रसपान॥
राम लाल चिन्ता हरण, राम लाल सुखधाम।
नत मस्तक सेवक करे, कोटिश कोटि प्रणाम॥

॥ चौपाई ॥

प्रभु मम सिर आपके चरणों पर, इसकी रक्षा हे पिता करो।
मम नेत्र निहारें छवि तोरी, सब इनकी व्याधि आप हरो।
मम कान सुनें तोरी महिमा, बस और न कोई बात सुनें।
प्रभु इनको शक्ति अलौकिक दो, तव कीर्ति यह दिनरात सुनें।
मम नासिका सूंघें चरण पुष्प, बस इसमें ही सुख को मानें।
यह मेरी रसना है प्रभु जी, गाती रहे नित्य तेरे गाने।
मम मुख हो चरणामृत लोभी, जिससे यह अपनी प्यास हरे।
प्रभु वास करो मेरे मन में, भृकुटी में सेवक ध्यान धरे।

॥ दोहा ॥

नाम आपका कण्ठ से, निकले आठों याम।
पूजन अर्चन आपका, और न हो कोउ काम॥
ध्येय आप ध्याता हूँ मैं, कारज केवल ध्यान।
ग्येय नाथ ग्याता हो जन, दीजो अपना ग्यान॥

॥ चौपाई ॥

हे कृपानाथ ! जो पग मेरे, बस आपके आश्रम में आवें।
यह सब ठौरन की ठौर जान, नहीं और ठौर जाना पावें।
यह सकल अंग जो हैं मेरे, नहीं मेरे भास रहे मेरे।
जब आप के अर्पण कर दीनें, तब गात्र मेरे हो गए तेरे।

निज गात्र जान मम गात्रन को, हे दीनबन्धु! अपना लेने।
हैं अधम नीच और गिरे हुए, कर अपनी दया उठा लेने।
मैं मूढ़ हूँ पामर पापी हूँ, पापिष्ठों का सरदार हूँ मैं।
वह तुच्छ अजामिल पापी था, कहीं उससे अधिक दुश्यार हूँ मैं।

॥ दोहा ॥

दूर बात है स्वर्ग की, नरक देख डर जाय।
द्वार नरक के बन्द हों, वह मुझ से भय खाय॥
पाप पाप कहते जिसे, मैं हूं मुजस्सम पाप।
नाथ आपकी शरण हूं, संकट हर लो आप॥

॥ चौपाई ॥

दो चार हों कष्ट तो बतलाऊं, यहां कष्टों के हैं ढेर हुवे।
उज़यारा नज़र न आता है, हैं चारों तरफ अन्धेर हुये।
इस देश प्रांत और नगरी में, तथा नगरी के बाज़ारों में।
गलियों में और मुहल्लों में, घर-2 में नर और नारों में।
है जगह जगह मेरी चर्चा, मेरी नहीं मेरे पापों की।
इक अगनी सी जल रही भगवन्, मेरे मन में संतापों की।
सुत दारा मात पिता बन्धु, दुहिता भगनी सब दुरकारें।
नहीं बने नाथ कोई मित्र मेरा, हट दूर सभी यह कह डारें।

॥ दोहा ॥

चिंता नहीं संसार की, यदि हों आप दयाल।
भाग मेरे उज्जवल करो, भागवन्ती के लाल।
संकट मोचन नाथ जी, हर लो संकट मोर।
काम बने मेरा प्रभो!, क्या लागत है तोर।

॥ छन्द ॥

प्रभु संकटमोचन जबहिं सुनें, तबसे सब संकट रोवन लागे।
जब शरण गही शरणागत ने, तब संकट दीन को छोड़ के भागे।
संकल्प विकल्प जो पाप रमें, जब हो गए नाथ के वे अनुरागे।
तब और की और भई 'बेज़र', सब सोगए पाप तो पुण्य थे जागे।

॥ छन्द ॥

प्रभु रामलाल श्री मुलखराज, दोनों की प्रतिमा प्यारी है।
इन दोनों में कोई भेद नहीं, दोनों की इक सरदारी है।
है योग एक योगेश्वर दो, प्रत्यक्ष मूरती न्यारी है।
बेज़र जी संकट काटन को, यह इक तलवार दुधारी है।

॥ चौपाई ॥

जय प्रभु रामलाल हितकारी, जय श्री मुलखराज पापारी।
जय प्रभु रामलाल अविनाशी, जय श्री मुलखराज सुखराशी।
जय प्रभु रामलाल योगेश्वर, जय श्री मुलखराज देवेश्वर।

जय प्रभु रामलाल सुखकर्ता, जय श्री मुलखराज दुखहरता।
जय प्रभु रामलाल ब्रह्मेशा, जय श्री मुलखराज वर्मेशा।
जय प्रभु रामलाल वर प्यारे, जय श्री मुलखराज उजयारे।
जय प्रभु रामलाल भव प्राणा, जय श्री मुलखराज कल्याणा।
जय प्रभु राममुलख शुभनामा, सेवक कोटिशः कोटि प्रणामा।

॥ दोहा ॥

संकट मोचन स्तोत्र को, जो गावे नर नार।
उसके संकट सब हरें, राम मुलख करतार॥
सेवक की श्रद्धा बढ़े, बढ़े प्रभु से प्यार।
योग बीच निष्ठा बढ़े, मांगो बारंबार॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुर्देवः परब्रह्मा, गुरुः पूज्यः परात्परः । १।
हरौ रुष्टे गुरौ तुष्टे, गुरु रक्षितुमीश्वरः।
सर्वे तुष्टे गुरौ रुष्टे, न कोऽपि रक्षितुंक्षमः । २।

❖❖❖❖

समाप्तम्

11. श्री महाप्रभु रामलाल जी का हवन यज्ञ

विधि - श्री महाप्रभु जी के सिंहासन के सन्मुख हवन कुण्ड स्थापित किया जाए। बाकी तीन ओर आसन बिछा कर यज्ञकर्त्ता भक्त बैठें। हवन कुण्ड के चारों ओर एक-एक गिलास अथवा लोटा जल का भर कर रखें। शुद्ध घी, सुगन्धित सामग्री और आम, बेरी, पलाश आदि हवन उपयोगी लकड़ियों के छोटे-छोटे खण्ड किए हुए हवन के लिए प्रस्तुत रखे जायें। धूप अगरबती आदि द्वारा वातावरण को सुगन्धित कर और चित्त श्री करुणासागर प्रभु जी के चरणों में जोड़ श्रद्धापूर्वक सब सज्जन मिलकर चालीसा और संकट मोचन स्तोत्र का पाठ करें। तदुपरान्त श्री प्रभु जी को नमस्कार कर आसन स्थित तीनों सज्जन नीचे लिखे मन्त्रों द्वारा तीन बार आचमन करें:-

आचमन

* ओं अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा (1) इस से एक ओं अमृतापिधानमसि स्वाहा (2) इस से दूसरा ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्री श्रयतां स्वाहा (3) इससे तीसरा

* **अर्थ** :- हे अविनाशी प्रभो ! आप मेरे आधार हैं। हे अविनाशी प्रभो ! आप मेरे रक्षक हैं। हे प्रभो ! मैं आप से सत्य (ज्ञान), ऐश्वर्य एवं यश के लिए प्रार्थना करता हूं ताकि मैं दूसरों की मदद कर सकूं। मेरी विनती है कि मेरी सब कामनायें पूर्ण हों। (तैतिरीय आरण्यक अ० १० म० ३२,३३,३४)

॥ अंग स्पर्श ॥

तदुपरान्त नीचे लिखे मन्त्रों से अंगों का स्पर्श करें:-

*ओं वाङ्मे आस्येऽस्तु। इस मन्त्र से मुख।
ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु। इस मन्त्र से नासिका के दोनों छिद्र।
ओं अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु। इस मन्त्र से दोनों आखें।
ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु। इस मन्त्र से दोनों कान।
ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु। इस मन्त्र से दोनों बाहु।
ओं ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु। इस मन्त्र से दोनों जंघा।
ओं अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु।
इस मन्त्र से समस्त शरीर पर जल के छींटे से मार्जन करना।

---

* अर्थ :-

हे प्रभो! मेरी वाणी में (अच्छा एवं मीठा) बोलने की शक्ति दो।
हे प्रभो! मेरी नासिका में अच्छा सांस लेने की प्राण शक्ति दो।
हे प्रभो! मेरी आंखों में अच्छा देखने की शक्ति दो।
हे प्रभो! मेरे कानों में अच्छा सुनने की शक्ति दो।
हे प्रभो! मेरी भुजाओं में अच्छी बल शक्ति दो।
हे प्रभो! मेरी टांगों में (घुटनों में) चलने की अच्छी बल शक्ति दो।
हे प्रभो! मेरे शरीर के सब अंग रोग रहित हों। मेरा शरीर पूरी तरह स्वस्थ हो।
(पारस्कर गृह्य सूत्र अ० १, म० २५)

अग्नि प्रज्वलन

फिर नीचे लिखे मन्त्रों का उच्चारण करते हुए वेदी में समिधा चयन कर अग्नि प्रज्वलित करनी :-

1. **ओं भूर्भुवः स्वः** ।१। (गोमिल गृह्य सूत्र १.१.११)

2. **ओं भूर्भुवः स्वद्यौरिव भूमना पृथिवीव वरिम्णा।**
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे। २। (यजु० अ० ३ म० ५)

3. **ओं उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि,**
त्वमिष्टापूर्त्ते संसृजेथामयं च।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्त रस्मिन्।
विश्वे देवा यजमानश्च सीदत। ।३।
(यजु० अ० २५ म० ५४)

---

1 भावार्थ - हे प्रभो! आप तीनों लोकों-भूलोक, भुवःलोक और स्वःलोक में व्याप्त हैं। आप सर्वव्यापक प्रभु का हम ध्यान करते हैं।

2. हे सर्वव्यापक प्रभो ! आप का स्वरूप आकाश के समान महान और पृथ्वी के समान विस्तृत है। आपकी रची हुई इस पृथ्वी पर देवताओं की पूजा होती है। इसी पृथ्वी पर, हे प्रभो! आप की पूजा हेतु और अन्नादि सर्व-सुखों की प्राप्ति के लिए हम अग्नि प्रज्वलित करते हैं।

3. हे प्रभो! इस प्रज्वलित अग्नि में आप की पूजा कर अभिवांछित सुखों और सांसारिक कल्याण को हम प्राप्त करें। आप के चरणों द्वारा पवित्र इस मन्दिर में सब देवता यजमान सहित विराजमान हों।

जब अग्नि समिधाओं में प्रविष्ट होने लगे तब तीन लकड़ी आठ-आठ अंगुल की घृत में डुबा उन में से नीचे लिखे एक-एक मन्त्र से एक-एक समिधा को अग्नि में रखें:-

ओं समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्।
आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा॥
इदमग्नये **इदं न मम। १।** (यजु० अ० ३ म० १)

ओं सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन।
अग्नये जातवेदसे स्वाहा॥
इदमग्नये जातवेदसे, **इदं न मम। २।** (यजु०अ०३म०२)

ओं तं त्वा समिद्भिर ङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि।
बृहच्छोचा यविष्ठय स्वाहा ॥
इदमग्नयेऽङ्गिरसे **इदं न मम। ३।** (यजु० अ०३ म० ३)

पांच घृत आहुति

इस के पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र से पांच घृत की आहुति देनी:-

*** ओं अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्धवर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्म वर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा॥ इदमग्नये जातवेदसे इदं न मम॥**

* भावार्थ- हे प्रभो ! जिस प्रकार यह अग्नि इस ईंधन से प्रदीप्त हो रही है, ऐसे ही आप हमें सन्तान, पशुधन तथा ज्ञान और अन्नपाचन आदि की शक्ति से तेजस्वी बनायें। यह आप की वस्तु आहुति रूप में आप को समर्पित है। मेरा इस में कुछ नहीं।

वेदी पर जल सिंचन

तत्पश्चात् वेदी के पूर्व दिशादि चारों ओर जल छिड़कावें :-

ओं अदितेऽनुमन्यस्व । १ । इस मन्त्र से पूर्व।

ओं अनुमतेऽनुमन्यस्व । २ । इस से पश्चिम।

ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व । ३ । इस से उत्तर और

ओं देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं न पुनातु
वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु । ४ । इस से दक्षिण में।

अर्थ :-

हे अदिति! हमारी प्रार्थनायें सुनिये । (१)

हे इन्द्र! हमारी प्रार्थनायें सुनिये । (२)

हे सरस्वती! हमारी प्रार्थनायें सुनिये । (३)

हे प्रभो ! आप इस संसार को बनाने वाले हैं। आप यज्ञों के स्वामी हैं अतः आप हमें यज्ञों में हमारा मार्गदर्शन कराइये और यज्ञों को सफल बनाइये। यह यज्ञ हमारे लिए शुभ हो। आप सब सत्यविद्या के आदिमूल हैं और सब आप का गान करते हैं। हमारी बुद्धियों को प्रेरित कीजिए और हमारी वाणी में मिठास दीजिए (ताकि हम अच्छा सोचें एवं मीठा बोलें) (४)

अष्टोत्तरी माला

इसके बाद श्री महाप्रभु रामलाल अष्टोत्तरी माला के 108 मन्त्रों द्वारा 108 आहुतियां सामग्री तथा घृत की डालें। जैसे 'ओं श्री प्रभु राम लालाय स्वाहा' इस मन्त्र के साथ प्रथम आहुति। इसी प्रकार दूसरे, तीसरे आदि मन्त्रों के साथ आरम्भ में 'ओं'और अन्त में'स्वाहा' का उच्चारण कर आहुति डालनी। 108 आहुतियों के पश्चात् सब सज्जन खड़े होकर नीचे लिखे महामन्त्र द्वारा तीन-तीन आहुतियां डालें।

महामन्त्र

ओं नमः श्री रामलाल प्रभु जी परब्रह्मणे स्वाहा।

तदुपरान्त श्री विश्वकल्याणघन अनाथनाथ दीनवत्सल महाप्रभु रामलाल जी के दिव्य स्वरूप का चिन्तन करते हुए नीचे लिखी प्रार्थना सब मिल कर बोलें :-

अरदास

***सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।**
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग् भवेत्॥

---

* **अर्थ** - हे करुणा सागर प्रभु जी ! आपके चरणों में हम भक्तों की विनीत प्रार्थना है कि आप की कृपा से हम सब प्राणियों को सुख की उपलब्धि हो, सभी रोग रहित और स्वस्थ रहें, सब का हर तरह से भला हो, और आप की कृपा से किसी पर भी किसी प्रकार का दुःख न आये।

और अन्त में सब इकट्ठे निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए तीन बार पूर्णाहुति देकर श्री महाप्रभु जी को दण्डवत प्रणाम कर दिव्य आशीर्वाद प्राप्त करें :-

पूर्णाहुति

ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा ॥ ऊँ शांति, शांति, शांति॥

॥ इति॥

12. श्री महाप्रभु रामलाल अष्टोत्तरी माला

॥ दोहा॥

राम लाल अष्टोत्तरी जो ले निशिदिन फेर।
पूरण हों सब कामना मोक्ष न लावत देर।
युग युग में अवतार लें दु:ख हरण भगवान।
जो जिस युग में प्रकट हो वही करे कल्याण।
राम लाल कलिकाल में लेकर कला अनन्त।
जग तारण कारण प्रभु प्रकट भये भगवन्त।
राम लाल सिमरे सदा जो नर चतुर सुजान।
कलि के तारण हार हैं राम लाल भगवान।
ब्राह्मण कुल दिनकर प्रभु भागवन्ती सुत राम।
तिनके चरण सरोज पर सेवक लाख प्रणाम।

* अथ अष्टोत्तरी माला *

श्री प्रभु राम लालाय नमः ।१।
श्री गंडा रामात्मजाय नमः ।२।
श्री भागवन्ती पुत्राय नमः ।३।
श्री प्रभु योगेश्वराय नमः ।४।
श्री योग स्वरूपिणे नमः ।५।
श्री योगाचार्याय नमः ।६।
श्री योग मार्तण्डाय नमः ।७।
श्री ब्राह्मणेशाय नमः ।८।
श्री ब्राह्मणकुलकमल दिवाकराय नमः ।९।
श्री ब्रह्म स्वरूपिणे नमः ।१०।
श्री जगत गुरवे नमः ।११।
श्री विप्र वंशेशाय नमः ।१२।
श्री योग सूर्याय नमः ।१३।
श्री धर्म भास्कराय नमः ।१४।
श्री कर्म भास्वताय नमः ।१५।
श्री कलि अर्काय नमः ।१६।
श्री सुधा सर निवासिने नमः ।१७।
श्री पीयूष सर रत्नाय नमः ।१८।
श्री ज्योतिषाऽचार्याय नमः ।१९।

श्री पंडित वर्याय नमः । २० ।
श्री योगचन्द्राय नमः । २१ ।
श्री योग नक्षत्राधिपतये नमः । २२ ।
श्री योग नाथाय नमः । २३ ।
श्री योग सागराय नमः । २४ ।
श्री कलितम हर्त्रे नमः । २५ ।
श्री भक्त जन वल्लभाय नमः । २६ ।
श्री अष्ट वंश जलजाय नमः । २७ ।
श्री विश्व मित्राय नमः । २८ ।
श्री योग प्राणाय नमः । २९ ।
श्री शौर्य पतये नमः । ३० ।
श्री गणित अहर्पतये नमः । ३१ ।
श्री फलित हंसाय नमः । ३२ ।
श्री अरिष्ट निवारिणे नमः । ३३ ।
श्री योग प्रर्वतकाय नमः । ३४ ।
श्री प्राणाधिपतये नमः । ३५ ।
श्री सर्वेश्वराय नमः । ३६ ।
श्री व्यानाधिपतये नमः । ३७ ।
श्री समानाधिपतये नमः । ३८ ।
श्री उदानाधिपतये नमः । ३९ ।
श्री अपानाधिपतये नमः । ४० ।

श्री पाप विनाशिने नमः ।४१।
श्री ज्ञान प्रकाशिने नमः ।४२।
श्री स्वर्गाधिपतये नमः ।४३।
श्री मुलख प्राणाय नमः ।४४।
श्री मुलख हृदय पतये नमः ।४५ ।
श्री मुलख मनवन विहारिणे नमः ।४६।
श्री आसन पतये नमः ।४७।
श्री प्राणायाम पतये नमः ।४८।
श्री प्रत्याहार पतये नमः ।४९।
श्री धारणा पतये नमः ।५०।
श्री ध्यान पतये नमः ।५१।
श्री समाधि पतये नमः ।५२।
श्री अष्टांग पतये नमः ।५३।
श्री पंच भूत पतये नमः ।५४।
श्री यम पतये नमः ।५५।
श्री नियम पतये नमः ।५६।
श्री योग देवाय नमः ।५७।
श्री पर ब्रह्मणे नमः ।५८।
श्री परा पतये नमः ।५९।
श्री अपरा पतये नमः ।६०।
श्री विश्व भर्त्रे नमः ।६१।

श्री	ब्रह्म	देवाय	नमः	।६२।
श्री	रामलाल	परमेश्वराय	नमः	।६३।
श्री	रामलाल	ईश्वराय	नमः	।६४।
श्री	रामलाल	जगदीश्वराय	नमः	।६५।
श्री	रामलाल	महादेवाय	नमः	।६६।
श्री	रामलाल	रामाय	नमः	।६७।
श्री	रामलाल	कृष्णाय	नमः	।६८।
श्री	रामलाल	सर्वावतारूपिणे	नमः	।६९।
श्री	रामलाल	जगत कर्त्रे	नमः	।७०।
श्री	रामलाल	जनार्धनाय	नमः	।७१।
श्री	रामलाल	विश्वेश्वराय	नमः	।७२।
श्री	रामलाल	पुरुषोत्तमाय	नमः	।७३।
श्री	रामलाल	मुलखतनु पतये	नमः	।७४।
श्री	रामलाल	मुलखमन पतये	नमः	।७५।
श्री	रामलाल	मुलखजीवनाय	नमः	।७६।
श्री	रामलाल	विष्णु रूपाय	नमः	।७७।
श्री	रामलाल	शिवाय	नमः	।७८।
श्री	रामलाल	चतुरवेदधराय	नमः	।७९।
श्री	रामलाल	देवाधिपतये	नमः	।८०।
श्री	रामलाल	व्योमाय	नमः	।८१।
श्री	रामलाल	वायवे	नमः	।८२।

श्री रामलाल जातवेदाय नमः ।८३।
श्री रामलाल वरुणाय नमः ।८४।
श्री रामलाल भूमि रूपिणे नमः ।८५।
श्री रामलाल दीनदयालाय नमः ।८६।
श्री रामलाल अमराय नमः ।८७।
श्री रामलाल अजराय नमः ।८८।
श्री रामलाल प्रणवाय नमः ।८९।
श्री रामलाल अनन्ताय नमः ।९०।
श्री रामलाल निर्गुणाय नमः ।९१।
श्री रामलाल अकाय नमः ।९२।
श्री रामलाल गुणात्मने नमः ।९३।
श्री रामलाल चिदानन्दाय नमः ।९४।
श्री रामलाल ज्ञानभास्कराय नमः ।९५।
श्री रामलाल त्रिगुणातीताय नमः ।९६।
श्री रामलाल विराट्रूपाय नमः ।९७।
श्री रामलाल सम्राट्स्वरूपाय नमः ।९८।
श्री रामलाल पुराणाय नमः ।९९।
श्री रामलाल आदि पुरुषाय नमः ।१००।
श्री रामलाल विश्व व्यापिने नमः ।१०१।
श्री रामलाल ज्योतिस्वरूपाय नमः ।१०२।

श्री रामलाल पंचनद भूषणाय नमः ।१०३।
श्री रामलाल मुक्तिप्रदात्रे नमः ।१०४।
श्री रामलाल ओंकाराय नमः ।१०५।
श्री रामलाल कलिदोषहर्त्रे नमः ।१०६।
श्री रामलाल सर्व व्यापकाय नमः ।१०७।
श्री रामलाल श्री मुलखराजाय नमः ।१०८।

॥ इति अष्टोत्तरी माला ॥

13. नैमित्तिक-कर्म

किसी विशेष अवसर पर श्री प्रभु जी की कृपा, आशीर्वाद प्राप्त करने के निमित्त जब भक्त श्रद्धापूर्वक श्री प्रभु जी का पूजन और उत्सव आदि करते हैं तो उस पूजा आदि को नैमित्तिक कर्म कहा जाता है।

नैमित्तिक कर्म निम्नलिखित अवसरों पर करें :

(क) दीक्षा विधि (ख) वर्षगांठ या जन्म दिन (ग) बच्चे का नामकरण संस्कार (घ) बच्चे का मुण्डन संस्कार (ङ) विवाह संस्कार (च) किसी की मृत्यु पर।

विशेष-२ सामाजिक पर्वों पर भी नैमित्तिक कर्म किया जाए, जैसे वैसाखी और संक्रांति के पर्व, व्यासपूजा, रक्षा बन्धन, विजय दशमी, दीपावली, लोहड़ी, बसन्त, शिवरात्रि, होली, राम नवमी आदि।

साप्ताहिक सत्संग भी इसी कोटि में आता है।

विधि - उपर्युक्त प्रत्येक अवसर पर श्री प्रभु जी के मन्दिर को भली प्रकार सजाना चाहिए और अन्य भक्त जनों को तथा अपने श्रद्धालु इष्टजनों को आमन्त्रित करना चाहिए।

कार्यक्रम का आरम्भ श्री प्रभु जी की स्तुति में भजनों द्वारा, श्री महाप्रभु रामलाल चालीसा के पाठ द्वारा अथवा 'योगी सद्गुरुमाहात्म्य' के सामूहिक पाठ द्वारा कर सकते हैं।

कार्यक्रम के अन्त में श्री महाप्रभु रामलाल संकट मोचन का पाठ, आरती तथा भविष्यवाणी का पाठ करना चाहिए।

अलग-अलग अवसरों पर जो कर्म विहित हैं, वे नीचे दिये जाते हैं। विधि विधान का शुद्ध ज्ञान व विस्तार आश्रम के आचार्य से प्राप्त करना चाहिए।

(क) दीक्षा विधि

(श्री प्रभु जी से स्वतंत्र रूप से)

ऋषिवर श्री काक भुषुण्डी के कथन अनुसार श्री प्रभु राम लाल जी महाराज इस समय गुरुओं के गुरु अपने तीसरे देह में सर्वत्र व्यापक हैं और इस रूप में कल्पांत तक रहेंगे। शरणागत भक्तों को वे सर्वत्र शरण प्रदान कर रहे हैं। अत: जिज्ञासु भक्त स्वतंत्र रूप से सीधी श्री प्रभु जी से दीक्षा ग्रहण कर सकता है।

जो संस्कारी भक्त श्री प्रभु जी से स्वतंत्र रूप से दीक्षित होने का अभिलाषी हो उसे चाहिए कि तन मन से शुद्ध हो कर श्री प्रभु जी के स्वरूप के सन्मुख बैठे और सहृदय पूर्ण उन से प्रार्थी हो।

"हे अनाथों के नाथ, गुरुओं के गुरु योगेश्वर श्री प्रभु राम लाल जी महाराज! मैं आप की शरण में आया हूँ। मुझे अपना शिष्य स्वीकार करें।" इस प्रार्थना के साथ श्री प्रभु जी को तिलक करे, और माला पहनाये तथा प्रसाद अर्पण करे।

तत्पश्चात खड़ा होकर निम्नलिखित संकल्प ले -

" हे प्रभु जी ! मैं आप की अनन्य शरण में रह कर

नित्य प्रति योग के साधन करता रहूंगा, आप के दिव्य ग्रंथ 'श्री योग महादिव्य रामायण' का पाठ नित्य करूँगा, और आप के दिव्य महामन्त्र 'ऊँ नमः श्री राम लाल प्रभु जी परब्रह्मणे नमः' का जाप करते हुए आप को हृदय में स्मरण करता रहूंगा। मैं अपना जीवन आप की शिक्षानुसार 'योगानुकूल' बनाने का यत्न करूँगा।''

यह संकल्प ले कर श्री प्रभु जी के चरणों में नमस्कार करे और प्रभु चरणों में चढ़ाया हुआ प्रसाद वितरण करे।

दीक्षा लेने का यह उपरोक्त दिन स्मरण रखे और प्रति वर्ष अपने उपरिलिखित संकल्प को श्री प्रभु जी के चरणों में खड़े हो कर उच्चारण कर अपना दीक्षा दिवस श्रद्धा पूर्वक मनाये तथा प्रसाद बांटे।

विशेष वक्तव्य :-

यदि जिज्ञासु भक्त अनपढ़ हो अथवा किसी अन्य कारण से स्वयं पढ़ नहीं सकता तो वह किसी संबंधी, मित्र अथवा पढ़े हुए बच्चे की सहायता से यह कार्य कर सकता है।

दिनांक : 07-08-2001 *''चमन लाल कपूर''*

(ख) वर्ष गांठ

पाठ - जन्मदिन से एक दिन पूर्व संभव हो तो 'श्री योग महादिव्य रामायण' का अखण्ड पाठ रखा जाये और जन्म दिवस पर उसका भोग डाला जाये।

हवन - तदुपरान्त हवन और आरती कर के श्री प्रभु जी का आशीर्वाद प्राप्त करते हुए मन में यह संकल्प किया जाए कि-

संकल्प - "मैं अपने अगले जन्मदिन तक और अधिक शुभ गुणों को अपने जीवन में लाऊँगा। अपने दोषों को दूर करूँगा। योगाभ्यास को निरन्तर करता रहूँगा और श्री प्रभु जी के चरणों में भक्ति को और अधिक दृढ़ करने का यत्न करूँगा।"*

बड़ों से आशीर्वाद - इस के पीछे माता पिता अथवा बड़ों के चरणों को स्पर्श कर, उन से आशीर्वाद प्राप्त की जाए और सब आगन्तुक सज्जनों को प्रसाद देकर प्रेमपूर्वक विदा किया जाये।

---

* यदि छोटे बच्चे का जन्म दिन मना रहें हैं तो ऐसा संकल्प माता पिता करें।

(ग) नामकरण संस्कार

जब बच्चा एक वर्ष का हो जाए तो प्रथम वर्ष गांठ पर या फिर इस के बाद किसी दिन पर उस का नामकरण संस्कार हो।

हवन :- वर्षगाठं के समान ही सब कर्म, जैसा ऊपर लिखा है, किया जाना चाहिए। हवन पर माता बच्चे को गोद में लेकर शुद्ध आसन पर बच्चे के पिता के बाईं ओर बैठे। हवन की समाप्ति पर पिता बच्चे के नासिका द्वार से बाहिर निकलते हुए वायु का स्पर्श कर नीचे लिखा मंत्र पढ़ कर अन्त में बच्चे का जो नाम रखना है बोले :-

नाम घोषणा :-

* मन्त्र - ऊँ कोऽसि कतमोऽस्येषोऽस्यमृतोऽसि ।

आहस्पत्यं मासं प्रविश (नाम बोलना)

फिर माता और पिता बच्चे सहित श्री प्रभु जी को प्रणाम करें और निम्नलिखित संकल्प मन में करें।

संकल्प :- "हम ऐसा कोई कर्म न करेंगे जिस से बच्चे पर बुरा असर पड़े। हम बच्चे के हित के लिए आदर्श

* गोभिलीय गृहसूत्र - 2-8-16

जीवन व्यतीत करने का यत्न करेंगे। अपने दोषों को दूर कर जीवन में सद्गुण लायेंगे ताकि हमारा यह बच्चा हमारा अनुसरण करता हुआ आदर्श व्यक्तित्व का स्वामी बने।"

तत्पश्चात् आये हुए सब सज्जन निम्नलिखित आशीर्वाद बोलकर बच्चे पर पुष्प वृष्टि करें और बच्चे का पिता अथवा आचार्य बच्चे को तिलक लगाये : -

बालक के लिए आशीर्वाद :-

"हे (बालक का नाम जो रखा है बोलना)! त्वमायुष्मान् वर्च्चस्वी तेजस्वी श्रीमान् भूयाः।"

कन्या के लिए आशीर्वाद :-

"हे (कन्या का नाम जो रखा है बोलना)! त्वमायुष्मती, वर्च्चस्विनी, तेजस्विनी श्रीमती भूयाः।"

इस के पश्चात् श्री प्रभु जी की आरती सब मिल कर उतारें। प्रसाद वितरित किया जाए। बच्चे के माता पिता सब आये हुए सज्जनों का धन्यवाद कर उन्हें विदाई दें।

(घ) मुण्डन संस्कार

इसे चूड़ा कर्म या केशच्छेदन संस्कार भी कहते हैं। यह जन्म से तीसरे वर्ष किया जाए। तीसरे जन्म दिन पर या उसके बाद भी किया जा सकता है।

हवन :- सर्व प्रथम बालक के माता पिता और आचार्य मिलकर प्रभु जी के सन्मुख हवन करें।

हवन के पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र का उच्चारण करते हुए बच्चे का पिता या आचार्य गर्म जल से बच्चे के केशों को गीला करे :-

1. **मन्त्र** - ऊँ अदितिः श्मश्रुवपत्वाप उन्दन्तु वर्चसा।
चिकित्सतु प्रजापतिर्दीर्घायुत्वाय चक्षसे॥

(अथर्ववेद कां० 6 सू० 68, मन्त्र 2.)

दायीं ओर के केश छेदन :-

तत्पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र के पाठ के साथ नाई अथवा आचार्य कैंची से दाईं ओर के कुछ बालों को काटे-

2. **मन्त्र** - ऊँ येनावपत् सविता क्षुरेण
सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान्।
तेन ब्राह्मणो वपतेदमस्य
गोमानश्ववानयमस्तु प्रजावान्॥

(अथर्ववेद कां० 6, सू० 68, मन्त्र 3)

---

1. भावार्थ- हे सर्व विश्व के पालन करने वाले प्रभु जी ! इस बालक के केशों को जल से सिंचित कर तेज धार वाले उस्तरे से मुण्डन करने जा रहे हैं। आप कृपा करें कि यह बालक सदा निरोग रह कर, दीर्घ आयु को भोगे।

2. भावार्थ- हे सर्वज्ञ प्रभो! कुशल नापित और हम सब भक्त जन इस बालक का मुण्डन संस्कार कर रहे हैं। आप की कृपा से यह जीवन में सुखी और समृद्ध बने, इस के पास गाएं, घोड़े आदि धन हो और प्रजा का स्वामी बने।

बायीं ओर के केश छेदन :-

पुनः इसी मन्त्र पाठ के साथ कैंची से बाईं ओर के कुछ बालों को काटें।

पीछे के केश छेदन :-

फिर इसी मन्त्र के पाठ के साथ पीछे के बालों को काटा जाए।

आगे के केश छेदन :-

पुनः इसी मन्त्र का पाठ करते हुए आगे के बालों को काटा जाये।

सारे सिर के बाल उस्तरे से काटने :-

कैंची से ऊपर लिखी विधि अनुसार कुछ बाल कट जाने के पश्चात् नाई उस्तरे से सारा मुण्डन करे। उस समय सब जन नीचे लिखे मन्त्र का पाठ बार-बार करते रहें।

* मन्त्र- ऊँ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्।
यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नोऽस्तु त्र्यायुषम्॥ (यजु०अ०3,म०62)

* भावार्थ - हे जगदीश्वर ! आपकी कृपा से जैसे जमदग्नी, कश्यप आदि योगीजन आनन्दपूर्वक तीन सौ वर्ष पर्यन्त आयु को भोग पाये, वैसे ही तीन तापों रहित, विद्या, विज्ञान आदि गुणों सहित तीन सौ या चार सौ वर्ष पर्यन्त सुखपूर्वक आयु हम भी योग युक्त होकर भोगें।

जब मुण्डन हो चुके तो बच्चे का पिता एक मिट्टी का पात्र नाई को दे। उस में वह सारे केशों को इकट्ठा कर ले। नाई को धन आदि देकर विदा किया जाये।

स्नान आदि - तत्पश्चात् दही आदि मल कर बच्चे को स्नान कराया जाये, उत्तम वस्त्र पहनाए जायें, तथा माता पिता बच्चे के साथ श्री प्रभु जी को प्रणाम करें। माता पिता मन से नीचे लिखी प्रार्थना करें-

"करुणा सागर श्री प्रभु जी! आपने हमें कृपा कर यह सन्तान रूपी रत्न दिया है। जिस प्रकार इस के सूतकी केशों को आप के चरणों में बैठ कर उतारा है इसी प्रकार हम इस बच्चे को उत्तम शिक्षा द्वारा राजसिक और तामसिक प्रवृत्तियों से मुक्त रख शुद्ध सात्विक प्रवृत्तियों की ओर प्रेरित करने में समर्थवान बनें। यह बच्चा आपकी कृपा से माता पिता और गुरुजनों का आदर करने वाला और आपके चरणों का दृढ़ भक्त बने।"

तदुपरान्त सब सज्जन मिलकर निम्नलिखित शब्दों से बच्चे को आशीर्वाद दें और उस पर पुष्प वृष्टि करें -

* **ओं त्वं जीव शरदः शतं वर्धमानः।**

* अर्थ - हे बालक! प्रभु कृपा से तुम बढ़ते, फूलते-फलते हुए सौ वर्ष आयु का उपभोग करो।

माता पिता अथवा आचार्य बच्चे को तिलक लगावें।

इसके पश्चात् सब मिलकर श्री प्रभु जी की आरती उतारें। बच्चे से भी आरती उतरवाई जाए।

अन्त में सब को प्रसाद दिया जाये और आने वाले प्रत्येक स्त्री पुरुषों का धन्यावाद कर उन्हें विदाई दी जाए।

(ङ) विवाह संस्कार

विवाह की उत्तम विधि यह है कि वर, वधू आश्रम में जा कर श्री प्रभु जी के चरणों में आचार्य द्वारा विवाह कृत्य करवायें और मनसा, वचसा, कर्मणा श्री प्रभु जी के आदर्शों के अनुसार जीवन यापन की दृढ़ प्रतिज्ञा करें। याद रहे, विवाह संस्कार आडंबर का नाम नहीं बल्कि गृहस्थ जीवन का भार उठाने का शुभ श्री गणेश है।

श्री प्रभु जी का सिंहासन सुन्दर रूप से सुसज्जित करें और उनके श्री चरणों में 'श्री योग महादिव्य रामायण' का अखण्ड पाठ किया जाये। फिर विद्वान आचार्य द्वारा नीचे लिखी विधि से विवाह का कृत्य करवाया जाये और अन्त में वर-वधु श्री प्रभु जी की आरती पूजा करें, तथा उनके दिव्य आशीर्वाद को अपने गृहस्थ जीवन की सफलता हेतु प्राप्त करें।

विवाह संस्कार के मुख्य अंग ये हैं :-

(१) हवन यज्ञ (२) वर-वधू का मण्डप में स्वागत (३) वर-वधू द्वारा अग्निहोत्र आदि (४) पाणि ग्रहण (५) शिलारोहण और धानी की आहुतियां (६) सप्तपदी व आसन परिवर्तन (७) मांग में सन्धूर भरना, प्रार्थना और संकल्प (८) जनता का आशीर्वाद (९) उपदेश और आरती।

(१) हवन यज्ञ :-

श्री प्रभु जी की मूर्ति के समक्ष वेदि में हवन कुण्ड स्थापित कर उस की अन्य तीनों दिशाओं में आचार्य, कन्या के माता पिता और वर के माता पिता श्री प्रभु जी की मूर्ति को तिलक कर के बैठें। संकट मोचन स्तोत्र का पाठ कर और अष्टोत्तरी माला के मन्त्रों से विधिवत हवन कर श्री प्रभु जी के चरणों से आशीर्वाद प्राप्त करें।

(२) वर-वधू का मण्डप में स्वागत :-

हवन के पश्चात् वर के माता पिता अपने आसनों से उठ जायें। कन्या को वेदि में लाकर आसन पर बिठलाया जाए। फिर वर को बुलवा कर कन्या के बाईं ओर आसन पर सम्मानपूर्वक बिठलाया जाए। कन्या का पिता आचार्य से निर्देश पा इस प्रकार वर का पूजन करे :-

(क) आसन अर्पण :-

"ओं विष्टरो विष्टरो विष्टरः प्रतिगृह्यताम्"

यह मन्त्र बोल कर कन्या का पिता वर को एक आसन दे। जिसे वर 'ओं प्रतिगृह्णामि' इन शब्दों का उच्चारण कर ग्रहण करे और अपने स्थान पर बिछा कर उस पर बैठे।

(ख) पाद्य (पैर धोने का जल) अर्पण :-

"ओं पाद्यं पाद्यं पाद्यं प्रतिगृह्यताम्"

यह मन्त्र बोलकर कन्या का पिता वर को एक पात्र में जल दे। जिसे वर 'ओं प्रतिगृह्णामि' इन शब्दों का उच्चारण कर ग्रहण करे और उस जल से अपने पैरों के अग्रभाग को धोवे।

(ग) अर्घ (मुख धोने के लिए जल) अर्पण :-

"ओं अर्घोऽर्घोऽर्घः प्रतिगृह्यताम्"

यह मन्त्र बोल कर कन्या का पिता वर को एक पात्र में मुख धोने के लिए जल दे। जिसे वर 'ओं प्रतिगृह्णामि' इन शब्दों का उच्चारण कर ग्रहण करे और उस जल से अपने मुख का कुछ भाग धोवे।

(घ) आचमन के लिए जल अर्पण :-

'ओं आचमनीयमाचनीयमाचनीयम् प्रतिगृह्यताम्।'

इस मन्त्र को बोल कर कन्या का पिता वर को एक पात्र में आचमन के लिए जल दे। जिसे वर 'ओं प्रतिगृह्णामि' इन शब्दों का उच्चारण कर ग्रहण करे और उस जल से तीन आचमन करे।

(ङ) मधुपर्क समर्पण :-

दही में शहद मिला कर मधुपर्क बनता है।

'ओं मधुपर्को मधुपर्को मधुपर्कः प्रतिगृह्यताम्।'

यह मन्त्र बोल कर कन्या का पिता एक कटोरी में वर को मधुपर्क दे। जिसे वर 'ओं प्रतिगृह्णामि' इन शब्दों का उच्चारण कर ग्रहण करे और यथेच्छा उस मधुपर्क का कुछ भाग खा ले।

(च) गो दान (किसी भी उत्तम वस्तु का देना) :-

'ओं गौर्गौर्गौः प्रतिगृह्यताम् ।'

यह मन्त्र बोल कर कन्या का पिता वर को स्वर्णमुद्रिका अथवा यथा शक्ति कुछ और भेंट दे। जिसे वर 'ओं प्रतिगृह्णामि' इन शब्दों का उच्चारण कर आदर सहित ग्रहण करे।

(छ) कन्या दान :-

'ओं [1]अमुक गोत्रोत्पन्नामिमाम् [2]अमुक नाम्नीम् अलङ्कृतां कन्यां प्रतिगृह्णातु भवान्।'

यह मन्त्र बोलकर कन्या का पिता अपनी कन्या का हाथ वर के हाथ में पकड़ाये। जिस पर 'ओं प्रतिगृह्णामि' इन शब्दों का उच्चारण कर वह आदर पूर्वक उसे ग्रहण करे।

(३) वर - वधू द्वारा हवन :-

वर और वधू दोनों श्री प्रभु जी को और आचार्य को तिलक करें और आचार्य के साथ मिल कर नीचे लिखी विधि से हवन करें:-

आचमन, अंगस्पर्श, अग्नि प्रज्वलन, पांच घृत आहुति और वेदि पर जल सिंचन की जो विधि सामान्य हवन में लिखी है उसे कर नीचे लिखे मन्त्रों द्वारा घी और सामग्री की आहुतियां दें:-

ओं अग्नये स्वाहा।

इद मग्नये - इदं न मम ।१।

1. "अमुक" के स्थान पर गोत का नाम बोलना।
2. "अमुक" के स्थान पर कन्या का नाम बोलना।

ओं सोमाय स्वाहा ॥

इदं सोमाय - इदं न मम ।२।

ओं प्रजापतये स्वाहा॥

इदं प्रजापतये - इदं न मभ ।३।

ओं इन्द्राय स्वाहा॥

इदं इन्द्राय -इदं न मम ।४।

ओं भूरग्नये स्वाहा॥

इमग्नये -इदं न मम ।५।

ओं भुवर्वायवे स्वाहा॥

इदं वायवे -इदं न मम ।६।

ओं स्वरादित्याय स्वाहा॥

इदमादित्याय -इदं न मम ।७।

ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा॥

इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः -इदं न मम ।८।

ओं यदस्यकर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वान्यूनमिहाकरम्
अग्निष्टत्स्विष्टकृद्विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे।
अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्व प्रायश्चित्ताहुतीनां
कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा॥

इदमग्नेय स्विष्टकृते -इदं न मम ।९।

ओं प्रजापतये स्वाहा॥

इदं प्रजापतये -इदं न मम ।१०।

ओं भूर्भुवः स्वः। अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः आरे वाधस्व दुच्छुना स्वाहा॥

इदमग्नये पवमानाय -इदं न मम ।११।

ओं भूर्भुवः स्वः। अग्निर्ऋषिः पावमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः । तमीमहे महागयं स्वाहा॥

इदमग्नये पवमानाय -इदं न मम ।१२।

ओं भूर्भुवः स्वः।अग्नेपवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। दधद्रयिं मयि पोषं स्वाहा॥

इदमग्नये पवमानाय -इदं न मम ।१३।

ओं भूर्भुवः स्वः प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणां स्वाहा॥

इदं प्रजापतये -इदं न मम ।१४।

ओं त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा॥

इदमग्नी वरुणाभ्याम् -इदं न मम । १५।

ओं स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोति
नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ।
अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि
मृडीकं सुहवो न एधि स्वाहा॥

इदमग्नीवरुणाभ्यां - इदन्न मम ।१६।

ओं इमं मे वरुण श्रुधि हवमद्या च मृडय।
त्वामवस्युरा चके स्वाहा॥

इदं वरुणाय - इदन्न मम ।१७।

ओं तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते
यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशंस
मा न आयुः प्र मोषीः स्वाहा॥

इदं वरुणाय - इदन्न मम ।१८।

ओं ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा
वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत
विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा।
इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो
मरुद्भयः स्वर्केभ्यः- इदन्न मम ।१९।

ओंअयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमयासि।
अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजँ स्वाहा॥

इदमग्नये अयसे - इदन्न मम ।२०।

ओं उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय।
अथावयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा॥

इदं वरुणायादित्यायादितये च-इदन्न मम ।२१।

ओं भवतं नः समनसौ सचेतसावरेपसौ। मा यज्ञँहिँसिष्टँ
मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा॥

इदं जातवेदोभ्यं - इदन्न मम ।२२।

* ओं भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो न प्रचोदयात् स्वाहा ।२३।

इस मन्त्र से तीन आहुतियाँ दें।

(४) पाणि ग्रहण :-

ऐसे होम करके वर आसन से उठ अपने वामहस्त से वधू का दाहिना हाथ सीधा कर ऊपर उठाए और अपना दाहिना हाथ उसके हाथ पर रख नीचे लिखे वेद मन्त्रों का उच्चारण करे :-

*अर्थ :- ओं जीवन दाता, दुःखहर्ता और आनन्द देने वाला है। हम उस पैदा करने वाले, वरण करने योग्य, ज्ञान स्वरूप और दिव्यगुणी परमेश्वर का ध्यान करें। वह परमेश्वर हमारी बुद्धियों को प्रेरित करे। (यजु० अ० 36 म० 33 ऋ० म० 3 सूक्त 62 म० 10)

(१) ओं गृभ्णामि ते सौभागत्वाय हस्तं
मया पत्या जरदष्टिर्यथासः।
भगो अर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यं
त्वा दुर्गार्हपत्याय देवाः॥

(ऋ० म० 10, सू० 85, मन्त्र 36)

भावार्थ - हे बरानने! मैं सौभाग्य की बढ़ती के लिए तेरे हाथ को ग्रहण करता हूं। मुझ पति के साथ जरावस्था को सुखपूर्वक प्राप्त हो। सकल ऐश्वर्ययुक्त, न्यायकारी, जगत की उत्पत्तिकर्त्ता और जगत का धर्ता परमात्मा और यहां उपस्थित विद्वान लोग, गृहस्थाश्रम के अनुष्ठान के लिए तुझ को मुझे देते हैं।

(२) ओं भगस्ते हस्तमग्रभीत् सविता हस्तमग्रभीत्।
पत्नी त्वमसि धर्मणाहं गृहपति स्तव॥

(अथर्ववेद कां० 14, सू०1, मन्त्र 51)

भावार्थ - हे प्रिये ! मैं तेरे हाथ को ग्रहण करता हूं । धर्मयुक्त मार्ग में प्रेरक (सविता) मैं तेरे हाथ को ग्रहण करता हूं। तू धर्म से मेरी पत्नी है और मैं धर्म से तेरा गृहपति हूँ।

(३) ममेयमस्तु पोष्या, मह्यंत्वादाद् बृहस्पति :।
मया पत्या प्रजावति शं जीव शरदः शतम् ।

(अथर्ववेद कां० 14, सू० 1, मन्त्र 52)

भावार्थ- सब जगत के पालन करने वाले परमात्मा ने तुझ को

मुझे दिया है। तू जगत भर में मेरी पोषण करने योग्य पत्नी है। तू मुझ पति के साथ सुखपूर्वक सौ वर्ष तक जीवन धारण कर।

तत्पश्चात् वर-वधू श्री प्रभु जी को माथा टेक और यज्ञाग्नि की प्रदक्षिणा कर अपने-अपने स्थान पर खड़े हो जाएं।

(५) शिलारोहण और धानी की आहुतियां :-

कन्या की माता अथवा उसके भाई कन्या का दक्षिण पग उठवा कर पत्थर की शिला पर चढ़वायें और उपदेश में नीचे लिखा मन्त्र बोलें :-

ओं आरोहेममश्मानमश्मेव त्वं स्थिरा भव।
अभितिष्ट पृतन्यतोऽवबाधस्व पृतनायतः॥

भावार्थ - हे पुत्री ! तू इस पत्थर पर चढ़ और जीवन में चट्टान की तरह स्थिर रहना। शत्रुओं और संकटों का वीरता और दृढ़तापूर्वक सामना करना।

इस उपदेश के बाद कन्या के भाई कन्या से धानी की आहुतियां नीचे लिखे तीन मन्त्रों से इस प्रकार दिलवायें कि भाई कन्या के हाथ में धानी दें और कन्या वर के हाथ में धानी देवे। वर उस को यज्ञाग्नि में आगे लिखे मन्त्रोच्चारण के साथ डाले। तीन आहुतियां देकर वर-वधू यज्ञाग्नि की

प्रदक्षिणा करें। वधू आगे हो और वर उसके पीछे। इस प्रकार तीन-तीन आहुतियां डाल कर चार बार प्रदक्षिणा लेनी। पहली तीन प्रदक्षिणाओं में वधू आगे चले और चौथी में वधू वर के पीछे चले। चौथी प्रदक्षिणा के बाद दोनों श्री प्रभु जी को माथा टेकें और अपने अपने आसनों पर आकर बैठ जाएं। धानी की आहुतियां देने के तीन मन्त्र यह हैं:-

(1) ओं अर्यमणं देवं कन्या अग्निमयक्षत स नो
अर्यमा देवः प्रेतो मुञ्चतु मा पतेः स्वाहा॥
इदमर्यम्णे अग्नये - इदन्न मम ॥

(2) ओं इयं नार्युपब्रूते लाजानावपन्तिका।
आयुष्मानस्तु मे पतिरेधन्तां ज्ञातयो मम स्वाहा॥
इदमग्नये - इदं न मम ॥

(3) ओं इमाँल्लाजानावपाम्यग्नौ समृद्धिकरणं तव।
मम तुभ्यं च संवननं तदग्निरनुमन्यता मियँ स्वाहा।
इदमग्नये - इदं न मंम ॥

(६) सप्तपदी और वर-वधू का आसन परिवर्तनः-

वर और वधू श्री प्रभु जी के आसन के सन्मुख थोड़ी दूरी पर खड़े हो जाएँ और नीचे लिखे मन्त्रों से एक-एक कदम आगे बढ़ते हुए सात कदमों में श्री प्रभु जी के आसन तक

पहुँच, उन्हें माथा टेक लौट कर आसन बदल कर बैठ जाएँ अर्थात् अब वधू वर के बाईं ओर बैठे। सप्तपदी के सात मन्त्र ये हैं :-

(१) ओं इषे एक पदीभव, सा मामनुव्रता भव, विष्णुस्त्वा नयतु, पुत्रान् विन्दावहै बहूँस्ते सन्तु जरदष्टयः॥ इस से एक पग चलें।

(२) ओं ऊर्जे द्विपदी भव, सा...
इस मन्त्र से दूसरा।

(३) ओं रायस्पोषाय त्रिपदी भव, सा...
इस मन्त्र से तीसरा।

(४) ओं मायोभव्याय चतुष्पदी भव, सा...
इस मन्त्र से चौथा।

(५) ओं प्रजाभ्यः पञ्चपदी भव, सा...
इस मन्त्र से पांचवां।

(६) ओं ऋतुभ्यः षट्पदी भव, सा...
इस मन्त्र से छठा।

(७) ओं सखा सप्तपदी भव, सा...
इस मन्त्र से सातवां।

(७.) मांग में सन्धूर भरना, प्रार्थना और संकल्प :-

श्री प्रभु जी के चरणों का ध्यान करते हुए वर और वधू दोनों नीचे लिखे मन्त्र द्वारा परस्पर एकचित होने की प्रार्थना करें :-

* ओं मम व्रते ते हृदयं दधामि,
मम चित्तमनु चित्तं ते अस्तु।
मम वाचमेकमना जुषस्व,
प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम्॥

इस प्रार्थना के साथ वर वधू की मांग में सन्धूर भरे और फिर दोनों को आचार्य नीचे लिखा संकल्प दिलवाये:-

" हम दोनों आज श्री प्रभु जी की इच्छा से और अपने गुरुजनों की आज्ञा से गृहस्थाश्रम में प्रवेश कर रहे हैं। श्री प्रभु जी के सन्मुख हम यह संकल्प लेते हैं कि हम दोनों परस्पर प्रेमपूर्वक गृहस्थाश्रम का संचालन करेंगे। श्री प्रभु जी की मर्यादानुसार और गुरुजनों की आज्ञानुसार अपने कर्त्तव्यों के पालन में सदा तत्पर रहेंगे तथा श्री प्रभु जी की शरण में रह कर शुद्ध जीवन व्यतीत करने का यत्न करेंगे। "

---

* **भावार्थ** - श्री प्रभु जी ने हमें कृपा कर एक दूसरे से संयुक्त किया है। उन की कृपा से ही हम दोनों की भावनायें संकल्प और वचन एक हों।

(८.) जनता द्वारा आशीर्वाद :-

वर नीचे लिखे मन्त्र द्वारा सभी सज्जनों से प्रार्थना करे कि वे उस की पत्नी को सौभाग्यवती होने का आशीर्वाद दें।

ओं सुमङ्गलीरियं वधूरिमां समत पश्यत।
सौभाग्यमस्यै दत्त्वा याथास्तं विपरेतन ॥
(ऋ० मं० 10, सू० 95, मं० 33)

सभी लोग वर-वधू पर पुष्प वृष्टि करें और नीचे लिखा आशीर्वाद प्रदान करें :-

ओं सौभाग्यमस्तु। ओं शुभं भवतु।

(९.) उपदेश और आरती :-

अन्त में आचार्य वर-वधू को गृहस्थ धर्म का समुच्चित उपदेश दे और सभी सज्जन मिलकर श्री प्रभु जी के चरणों की आरती उतार चरणामृत और प्रसाद प्राप्त करें।

(च) मृत्यु पर

किसी की मुत्यु पर किया जाने वाला नैमित्तिक कर्म बहुत महत्त्व रखता है। शरीर छोड़ कर जा रहे जीव की सद्गति में जितना अधिक से अधिक सहाई बन सकें बनना चाहिए। अत: जब किसी की मृत्यु हो रही हो तो उस समय-

१. उसके सामने श्री प्रभु जी का चित्र स्थापित कर शुद्ध घृत की ज्योति प्रकट कर देनी चाहिए।

२. "ओं नमः श्री रामलाल प्रभु जी परब्रह्मणे नमः" इस महामन्त्र का जाप मधुर स्वर में आरम्भ कर देना चाहिए।

३. जब मृत्यु हो जाए तो शव का संस्कार पूर्ण सामाजिक मर्यादा अनुसार किया जाये।

४. श्री प्रभु जी के सन्मुख प्रकट की हुई ज्योति चार दिन तक बुझने न पाए। उसमें घृत डालते रहना चाहिए और उस स्थान पर सज्जन पुरुष महामन्त्र का अखण्ड जाप करते रहें।

५. घर में रोना धोना नहीं चाहिए बल्कि सब लोग ज्योति के पास बैठकर श्री प्रभु जी को स्मरण करते हुए महामन्त्र के जप में लगें।

६. चार दिन के पश्चात् हवन किया जाये और श्री प्रभु जी की आरती उतार कर "श्री योग महादिव्य रामायण" का अखण्ड पाठ आरम्भ किया जाए। जो भी सज्जन पुरुष आएं वे अखण्ड पाठ का श्रवण करें।

७. जब अखण्ड पाठ का भोग पड़े तो फिर हवन किया जाये, श्री प्रभु जी की आरती उतारी जाए, कीर्तन हो।

८. अखण्ड पाठ के भोग के साथ ही मृतक की सद्गति के लिए की गई क्रियाएं सम्पूर्ण समझी जानी चाहिएं।

सामाजिक मर्यादा अनुसार यदि और कुछ करना आवश्यक हो तो वह भी श्री प्रभु जी की प्रतिमा के सन्मुख ही किया जाए। और उन क्रियाओं का समापन्न संकट मोचन स्तोत्र पाठ तथा आरती के साथ हो।

(छ) सामाजिक पर्व

१. प्रत्येक सामाजिक पर्व जैसे दीवाली आदि पर सब भक्त श्री प्रभु जी के चरणों में एकत्र होकर अथवा अपने परिवार के ही सब सदस्य मिल कर हवन करें। उस पर्व पर देश काल अनुसार जो शुद्ध सामाजिक रीति हो वह भी श्री प्रभु जी के समक्ष ही की जाये और श्री प्रभु जी के चरणों में भजन कीर्तन आरती करने के पश्चात् प्रसाद बांटा जाए।

२. प्रत्येक सामाजिक पर्व का कोई न कोई आध्यात्मिक पक्ष होता है जिस कारण से वह पर्व अमर है। आचार्य महोदय से प्रार्थना की जाये कि वे अपने प्रवचन में उसकी व्याख्या करें और सब सज्जन दत्त चित्त होकर श्रवण करें।

३. सामाजिक पर्व पर यह संकल्प करना चाहिए कि आगामी पर्व तक हम लोग अपनी भक्ति और योग साधना में अधिकतर उन्नति करने का यत्न करेंगे।

४. रामनवमी और व्यास पूजा दो पर्व विशेष हैं। रामनवमी श्री प्रभु जी के पवित्र जन्म दिन का परम पावन पर्व है और व्यास पूजा, गुरु पूजा का परम पावन पर्व है। इन दोनों अवसरों पर "श्री योग महादिव्य रामायण" का अखण्ड पाठ करना चाहिए और यथा शक्ति भण्डारा भी करना चाहिए। विद्वानों को निमन्त्रित कर उनके उपदेश, योग, गुरु भक्ति और श्री प्रभु जी के जीवन सम्बन्धी विषयों पर करवाने चाहिएं तथा श्री प्रभु जी के चरणों की पूजा अत्यन्त उत्साह पूर्वक कर अपने आप को कृतकृत्य बनाना चाहिए।

(ज) साप्ताहिक सत्संग

सब भक्तजन अपने अपने परिवारों सहित मिलकर सप्ताह में एक बार सत्संग किया करें। इस अवसर पर "योगी सद्गुरु माहात्म्य" में से सहपाठ, भजन कीर्तन, आचार्य महोदय का उपदेश तथा श्री प्रभु जी की आरती आदि की जाये, हवन भी किया जा सकता है, तथा "श्री योग महादिव्य रामायण" में से किसी प्रसंग का पाठ भी कर सकते हैं। समस्त क्रिया अति श्रद्धा और प्रेम से सम्पन्न होनी चाहिए।

❖ ❖ ❖ ❖

(१४.) श्री महाप्रभु रामलाल संकीर्तन

(1) मिलया जन्म अमोलक

मिलया जन्म अमोलक बंदे, इस दा कदर न पाया तूं।
जग दे गल विच पाके फंदे, हीरा जन्म गंवाया तूं ॥१
ऐसी सुन्दर काया पा के, कीता भजन न जग विच आके।
मन नूं विषयां विच फंसा के, मिट्टी विच रुलाया तूं ॥२
कीती सोच न मूर्ख प्राणी, तेरी चार दिनां जिन्दगानी।
ओकड़ जाना मड़ी मसानी, सिर तों काल भुलाया तूं॥ ३
ऐह ते दुनियां समझ सरां, न कोई अपना भैन भरा।
सब ने पैना अपने राह, जेहड़े साक बनाये तूं॥ ४
धीयाँ पुत्तर माल खजाने, इक दिन होने सभी बेगाने।
तेरे संग कोई न जाने, न एह साथ लयाया तूं ॥ ५
जितने जग दे रिश्ते दार, ऐह ते सब मतलब दे यार।
ऐन्हां नाल तूं पाके प्यार, अपना आप गँवाया तूं॥ ६
ऐथे लखां हो हवा गये, राजा राणे कई कहा गये।
बाजे कूड़ दे कई बजा गये, झूठा जाल बिछाया तूं॥ ७
काहनूं पिट पिट मरें गंवार, अपना जल्दी जन्म सुधार।
जिसने करना बेड़ा पार, उस नूं दिलों भुलाया तूं॥ ८
जग दे दुखड़े काहनूं रोंदा, क्यों नहीं सतगुरु चरणी औंदा।
मन नूं अपने न समझौंदा, मूर्ख वक्त गंवाया तूं॥ ९

(2) कर लै विचार बन्दे

कर लै विचार बंदे, कर लै विचार ओय।
बंदा तू बन जा चंगा, जन्म सुधार ओय ॥
माया दे जाल अन्दर, फसियों जग आन के।
सुत्ता बेहोश चादर, ममता दी तान के।
कीता सी वायदा जेहड़ा, भुल्ला इकरार ओय।
कर लै विचार बंदे, ...॥ १
दुनिया दे भोग तैनूं, लगदे ने मिट्ठे जी।
होया बर्बाद जीवन, ऐन्हां दे पिच्छे जी।
भुल्ल है गया तैनूं, आत्मा विचार ओय।
कर लै विचार बंदे, ...॥ २
काम, क्रोध, मोह, लोभ अहंकार जी।
दुनियां दे विच विच्छा, डाहडा ऐह जाल जी।
दुशमन ने पंजे तेरे, करदे खवार ओय।
कर लै विचार बंदे, ...॥ ३
दुनिया है डूंगा सागर, आवे न थाह जी।
सत्गुरु ही कडे ऐथों, बन के मल्लाह जी।
सत्गुरु दे चरणां उत्ते, निश्चय तूं धार ओय।
कर लै विचार बंदे, ...॥ ४
सतगुरु दे चरणी जा के, कर लै तूं बेनती।
आत्मा परमात्मा वाली, दस्सन गे गेनती।

दस्स ज्ञान तोड़न, माया दा जाल ओय।
कर लै विचार बंदे, ...॥५
श्रद्धा दे नाल सतगुरु, शरणी जो औंदा ई।
सतगुरु दयाल चंगा, बन्दा बणौंदा ई।
अपना तू "हरिचन्दा", कर लै उद्धार ओय।
कर लै विचार बंदे, ...॥६

(3) तैनू मिली सी सुन्दर काया

तैनूं मिली सी सुन्दर काया, प्रभु दे सिमरण नूं।
सिमरण नूं एह मिली सी काया, जग दा फंदा गल विच पाया।
कदर जन्म न पाया, प्रभु दे सिमरण नूं।
तैनूं मिली सी सुन्दर काया, ...॥१
विषयां दी तैनूं चढ़ गई मस्ती, भुल्ल गई है प्रभु दी भक्ति।
मिट्टी जन्म रुलाया, प्रभु दे सिमरण नूं।
तैनूं मिली सी सुन्दर काया, ...॥२
इक इक श्वास अमोलक तेरा, नाम बिना पिया जांदा जेहड़ा।
जरा सोच न आया, प्रभु दे सिमरण नूं।
तैनूं मिली सी सुन्दर काया, ...॥३
जिस नूं समझें मेरी काया, मिट्टी दा एह बुर्ज बनाया।
काल ने आन गिराया, प्रभु दे सिमरण नूं।
तैनूं मिली सी सुन्दर काया, ...॥४

मन्ने जेहड़े रिश्ते नाते, अन्त वेले सब तैथों खिसके।
तू जिन्हां ते प्रेम बढ़ाया, प्रभु दे सिमरण नूं।
तैनूं मिली सी सुन्दर काया, ...॥५
अपना रूप पछानियां नाहीं, कदर जन्म दी जानी नाहीं।
मन नूं नहीं समझाया, प्रभु दे सिमरण नूं।
तैनूं मिली सी सुन्दर काया, ...॥६
हुण वी सोच तू मूर्ख बन्दे, योग बिना सब झूठे धन्धे।
झूठी जग दी माया, प्रभु दे सिमरण नूं।
तैनूं मिली सी सुन्दर काया, ...॥७
की खटया तूं जग विच आ के, सुन्दर काया धूड़ मिला के।
अन्त वेले पछताया, प्रभु दे सिमरण नूं।
तैनूं मिली सी सुन्दर काया, ...॥८

(4) अब आ गया प्रभु हमारा

अब आ गया प्रभु हमारा, भक्तों का रखवारा।
कैलाश छोड़ नेपाल में आये, गणपति पार्वती तज आये।
गंगा लाये बाघमती धारा, अब आ गया प्रभु हमारा ॥१
पर्वतराज की गुफा में रहते, हिमालय पर्वत उसी को कहते।
वो सब पर्वत का सरदारा, अब आ गया प्रभु हमारा ॥२

सिंह भालू कपि सेवा में रहते, कन्द मूल फल ला कर देते।
है प्रभु का वही आहारा, अब आ गया प्रभु हमारा॥ ३
जिन की भवें लबों पर आई, शीष पै जटा अधिक सुहाई।
आँखें सूर्य चन्द्रमा प्यारा, अब आ गया प्रभु हमारा॥ ४
आयु उन की हम कैसे वर्णें, अति वृद्ध ऋषि बैठे तरने।
यम राज भी उन से हारा, अब आ गया प्रभु हमारा॥ ५
हम से पतित गये जब चरणा, सिंह भालू का बल तब हरना।
शेर श्वान कर डारा, अब आ गया प्रभु हमारा॥ ६
छः मास का श्वास चढ़ावें, फिर भी दास के पीछे जावें।
वहां उस अघोरी को मारा, अब आ गया प्रभु हमारा॥ ७
दिन एक कई रूप हो जावें, बाल वृद्ध ते युवा बन जावें।
'रामलाल' को इन्होंने तारा, अब आ गया प्रभु हमारा॥ ८

नोट - यह भजन श्री प्रभु जी ने अपने सद्गुरुदेव महाप्रभु जी की स्तुति में स्वयं रचा है। इस भजन में जिन-जिन घटनाओं का उल्लेख है वे 'श्री योग महादिव्य रामायण' में विस्तार से देखी जा सकती हैं।

❖❖❖❖

(5) प्रभु रामलाल हितकारी

प्रभु राम लाल हितकारी।
मैं आया शरण तिहारी।
कलिमल नाशन सब दुख हरता।
सकल विश्व के पालन करता।
मन हर मूरती प्यारी।
मैं आया ... ... ॥ १
कला अनन्त आप में स्वामी।
दीन बन्धु प्रभु अन्तर्यामी।
जन्म मृत्यु भयहारी।
मैं आया ... ... ॥ २
शिर पर नाथ श्वेत पट सोहे।
मुस्काहट त्रिभुवन मन मोहे।
जटा जूट छवि न्यारी।
मैं आया ... ... ॥ ३
जय जय राम लाल सिद्धेश्वर।
जय जय मुलख राज सर्वेश्वर।
मैं सेवक बलिहारी।
मैं आया ... ... ॥ ४

(6) प्रभु दा नाम ध्या लइये

ऐथे बैठ सदा नहीं रहना, प्रभु दा नाम ध्या लइये।
प्रभु दा नाम ध्या लइये, प्रभु दा नाम ध्या लइये ॥ १
एहो सन्त जनां दा कहना, प्रभु वल्ल चित्त लगा लइये।
ऐथे बैठ सदा नहीं रहना, ... ॥ २
ऐह है जगत मुसाफिर खाना, कइयाँ औणा कइयां जाना
ऐथे बैठ सदा नहीं रहना, ... ॥ ३
ऐथे लक्खां हो हवा गये, राजे शाह अमीर कहा गये।
ऐथे बैठ सदा नहीं रहना, ... ॥ ४
एह ते झूठा सब संसार, टुरदे जांदे मित्र यार।
ऐथे बैठ सदा नहीं रहना, ... ॥ ५
तूं क्यों सुत्ता पैर पसार, उठ तैयारी कर लइये।
ऐथे बैठ सदा नहीं रहना, ... ॥ ६
आया योग करन तूं बन्दे, पा लए गल विच जग दे धन्दे।
ऐथे बैठ सदा नहीं रहना, ... ॥७
कर लै कम तू जग विच चंगे, नेक कमाई कर लइये।
ऐथे बैठ सदा नहीं रहना, ... ॥ ८
ऐह ते दुनियां चलदी आई, न कोई भैण ते न कोई भाई।
ऐथे बैठ सदा नहीं रहना, ... ॥९
झूठी ममता गल विच पाई, मन दी खुदी मिटा लइये।
ऐथे बैठ सदा नहीं रहना, ... ॥१०

असली गल ते ऐहो सार, अपना जल्दी जन्म सुधार।
ऐथे बैठ सदा नहीं रहना, ... ॥ ११
की है जीवन दा इतबार, जीवन सफल बना लइये।
ऐथे बैठ सदा नहीं रहना, ... ॥ १२
मन नूँ 'हरिचन्द' समझावे, जेकर आखे एह लग जावे।
ऐथे बैठ सदा नहीं रहना, ... ॥ १३
फिर ते जन्म सफल हो जावे, मिल के सब समझा लइये।
ऐथे बैठ सदा नहीं रहना, प्रभु दा नाम ध्या लइये।

(7) सतगुरु नाम जपो

सद्गुरु नाम जपो, प्रभु जी का नाम जपो, रलमिल सारे।
प्रभु जी हर लेंगे कष्ट हमारे। सद्गुरु नाम जपो ... ॥
प्रभु जी योग सीखाने आये, बिगड़ी सब की बनाने आये।
कभी शिव रूप में, कभी ब्रह्म रूप में, प्रभु जी प्यारे॥
प्रभु जी हर लेंगे कष्ट हमारे। सद्गुरु नाम जपो ... ॥
प्रभु जी कलियुग में तारन आये, नैया पार लगाने आए।
कभी राम रूप में, कभी कृष्ण रूप में, प्रभु जी प्यारे।
प्रभु जी हर लेंगे कष्ट हमारे। सद्गुरु नाम जपो ... ॥
प्रभु चरणों में जो भी आये, मन चाही मुरादें पाए।
कभी राम रूप में, कभी मुलख रूप में, गुरु जी प्यारे।
गुरु जी हर लेंगे कष्ट हमारे। सतगुरु नाम जपो ... ॥

रामरती ने जो दर्शन पाया, जीवन अपना सफल बनाया।
हम क्यों दूर रहें, क्यों न शरणी पड़ें, आ गुरु द्वारे।
गुरु जी हर लेंगे कष्ट हमारे। सत्गुरु नाम जपो ... ॥

(8) मेरा प्रणाम है

महां योगी योगेश को, अवतारी महेश को,
मेरा प्रणाम है जी मेरा प्रणाम है।
प्रभु जी पापारी को, योगी जटाधारी को,
मेरा प्रणाम है जी मेरा प्रणाम है।
श्री गंडा राम जी के लाल को, दीनों के दयाल को,
मेरा प्रणाम है जी मेरा प्रणाम है।
सुभद्रा के सरताज को, भागवन्ती के लाल को,
मेरा प्रणाम है जी मेरा प्रणाम है।
स्वामी जी मुलखराज को, प्रभु जी रामलाल को,
मेरा प्रणाम है जी मेरा प्रणाम है।
रामा जी के राम को, मानक जी के शाम को,
मेरा प्रणाम है जी मेरा प्रणाम है।
सत्गुरु दीन दयाल को, करुणा सिन्धु दयाल को,
मेरा प्रणाम है जी मेरा प्रणाम है।

(9) प्रभु जी हुण साँभ लवो

प्रभु जी हुण सांभ लवो, किते लगदा नईयों चित्त मेरा।
गुरु जी हुण सांभ लवो, ... ॥
बचपन खेल च बीतिया मेरा, न कुछ ध्यान न भजन कीता तेरा।
गुरु जी हुण साँभ लवो, किते भुल न जाये बचड़ा तेरा।
गुरु जी हुण सांभ लवो, ... ॥
आई जवानी बनया अभिमानी, न सतसंग न किसी की मानी।
गुरु जी हुण सांभ लवो, किते भुल न जाए बचड़ा तेरा।
प्रभु जी हुण सांभ लवो, ... ॥
निर्बल देख के घेरा पाया, काम क्रोध, लोभ और मोह माया।
गुरु जी हुण सांभ लवो, किते डुब न जाए बचड़ा तेरा।
गुरु जी हुण सांभ लवो, ... ॥
ऊँचे बड़े प्रभु जी पर्वत तेरे, जंगल बेले बहुत घनेरे,
मन वी निर्बल, पैर भी मेरे।
गुरु जी हुण सांभ लवो, किते डिग न जाए बचड़ा तेरा।
प्रभु जी हुण सांभ लवो, किते लगदा नईयों चित मेरा॥

(10) श्रद्धा नाल गुरां दी शरणीं

श्रद्धा नाल गुरां दी शरणीं, सेवक औणा चाहीदा।
हुंदे सिदक दे बेड़े बन्ने, नहीं घबरौणा चाहीदा॥ १
श्रद्धा इमतिहाण कर पास, जे कर दर्जा लैना खास।
सत्गुरु मन्त्र दा अभ्यास, हर दम होणा चाहीदा॥ २
खोटे कम्मां वल न जाइये, मन नूं सतसंग विच लाइये।
सुरती मन्त्र विच टिकाइये, नहीं भटकौणा चाहीदा॥ ३
तारन हार गुरु दा मन्त्र, करदे रहिये जाप निरन्तर।
लग्गी मैल जो मन दे अन्दर, उसनूं धोना चाहीदा ॥ ४
जब तक टिकदी नहीं है सुरती, काहदा भजन ते काहदी भक्ति।
गल्लां नाल न होंदी मुक्ति, मन वश होना चाहीदा॥ ५
झूठी माया ते ऐह काया, ऐह ते आत्मा दी सब छाया।
आत्मा इसदे विच समाया, दर्शन पाना चाहीदा॥ ६
आत्म ज्ञान बिना नहीं मुक्ति, सत्गुरु बाझ न मिलती युक्ति।
नेति नेति दसिया श्रुति, अनुभव होना चाहीदा॥ ७
सत्गुरु शरणी छेती आ, तेरे दम दा नहीं वसा।
मन नूँ हर वेले समझा, सत्संग पाना चाहीदा॥ ८
श्रद्धा प्रेम नाल सत्संग, एहो प्रभु मिलन दा ढंग।
'सेवक' गुरु से यह वर मंग, चरणी लौणा चाहीदा॥ ९

❖❖❖❖

(11) नहीं छडना - नहीं छडना

नहीं छडना- नहीं छडना, दरबार प्रभु जी तेरा नहीं छडना,
नहीं छडने- नहीं छडने, श्री चरण गुरु जी तेरे नहीं छडने।
दुनिया भावें छुट जाये सारी, धन दौलत वी लुट जाए सारी।
छुट जान रिश्ते सारे, दर तेरा नहीं छडना॥
नहीं छडना- नहीं छडना, ... ॥
कर कृपा कुछ रहे न मेरा, अच्छा बुरा सब तेरा-तेरा।
पाप करां चाहे पुन्न, दर तेरा नहीं छडना॥
नहीं छडना- नहीं छडना, ... ॥
सत्गुरु योगी मिले जो प्यारे, लखां पापी एनां तारे।
फड़ियां जिनां ने लड़ तेरा, लड़ तेरा नहीं छडना॥
नहीं छडना- नहीं छडना, ... ॥
बनी रहे सत्गुरु दी दाया, ना मोह फसिये न विच माया।
करिये सदा सतसंग, संग तेरा नहीं छडना॥
नहीं छडना- नहीं छडना, ... ॥

(12) प्रभु जी मेरे हृदय में,

प्रभु जी मेरे हृदय में, तुम वास कर लो।
स्वामी जी मेरे हृदय में, तुम वास कर लो।
गुरु जी मेरे हृदय में, तुम वास कर लो।
यह खाली जगह है, इसे आ के भर दो।
जिधर मैं देखूँ, मैं तुझ को ही पाऊँ।
अपने सत्कर्मों से, तुझे मैं रिझाऊँ ।
गुरु जी इतनी शक्ति, मेरे मन में भर दो।
प्रभु जी मेरे हृदय में, ... ॥ 1
मेरे पाप कर्मों ने, मुझ को सताया।
दो भक्ति का दान, हरो मोह माया।
इतनी सी विनती, कबूल मेरी कर लो।
प्रभु जी मेरे हृदय में , ... ॥ 2
पापिन मैं हूँ, क्रोधिन मैं हूँ।
लोभन के साथ, अभिमानी मैं हूँ।
हूँ मोह की मैं मारी, मैं क्या - क्या नहीं हूँ।
निगाहें मेहर से, मेरे दोष हर लो।
प्रभु जी मेरे हृदय में , ... ॥ 3
घेरे न मुझ को, विषयों की माया।
हर इक जगह हो, उजाला उजाला ।
प्रभु मेरे मन में, दृढ़ निश्चय भर दो।
गुरु जी मेरे हृदय में, तुम वास कर लो॥ 4

(13) श्री महाप्रभु रामलाल महामन्त्र कीर्तन

ओं नमः श्री रामलाल प्रभु जी,
पर ब्रह्मणे नमः ।
ओं नमः कलिमल के हरता,
करुणा सागराय नमः ।
ओं नमः दीनन के बन्धु,
दीना नाथाय नमः ।
ओं नमः श्री पतित पावन,
पतित पुनीताय नमः ।
ओं नमः श्री विश्व मोहन,
विश्वधाराय नमः ।
ओं नमः श्री मुलख प्यारे,
सर्वाधाराय नमः ।
ओं नमः सर्वस्व माता,
सर्व विधाताय नमः ।

❖❖❖❖

AARTI OF SHRI 1008 PRABHU RAM LAL JI MAHARAJ

Om Jai Sadguru Almighty

Prabhuji, Jai Sadguru Almighty

Yogeshwar, Yogishwar, Prabhuji Almighty;

Om Jai Sadguru Almighty 1

Shri Ram Lal Prabhuji Almighty,

Shri Mulakh Raj Prabhuji Almighty;

Om Jai Sadguru Almighty,

Prabhuji, Jai Sadguru Almighty 2

Thou Art My gracious Lord,

Prabhuji, my gracious Lord,

I am thy humble votary ;

Om Jai Sadguru Almighty,

Prabhuji, Jai Sadguru Almighty 3

I am at thy lotus feet,

Prabhuji, at thy lotus feet ;

Bless my self and mind neat;

Om Jai Sadguru Almighty,

Prabhuji, Jai Sadguru Almighty 4

I meditate on thy Divine form,

Prabhuji, on thy Divine form,

Bless me and shun all harm ;

Om Jai Sadguru Almighty,

Prabhuji, Jai Sadguru Almighty 5

Give me Light, O my Lord,

Prabhuji, Light, O my Lord,

Thou art Lord of the whole World;

Om Jai Sadguru Almighty,

Prabhuji, Jai Sadguru Almighty 6

One who sings Aarti Daily,

Gets Prabhuji's blessings Daily;

Om Jai Sadguru Almighty;

Prabhuji, Jai Sadguru Almighty 7

DAILY PLAYER

Hey Prabhuji, Thank you for helping me in the past. Please keep helping me in the future also. I need your help.

Please help me to remember you all the time. Please help me to serve you all the time. Please increase my devotion for you.

Please forgive my mistakes. Please guide me, Keep me away from troubles and keep me close to you. Please give good habits to me.

Please keep me happy and healthy. Please keep me united with my parents, brothers and sisters and You. Please give us all a happy peaceful family life. Please help me in my studies and make me a good student. Please make me a good Son/Daughter, Grandson/Granddaughter, Brother/Sister and Friend.

Thank you again, God. Please keep helping me. Please take care of me.

SPECIAL REQUEST:

Anything you want God to help you in, say it in your own words.

❖ योग साधन आश्रम के नियम ❖

(श्री योगेश्वर प्रभु रामलाल जी महाराज द्वारा रचित)

1. आश्रम में किसी प्रकार की फीस नहीं ली जाती।
2. पुरुषों को पुरुष और स्त्रियों को स्त्रियां साधन सिखलातीहैं।
3. आश्रम के विद्यार्थी तीन श्रेणियों में विभक्त किये जाते हैं:-

   (क) जो सर्वदा आश्रम में रहकर अपने साधन को करते हुए आश्रम की यथा योग्य परिचर्य्या और अन्य भाइयों की प्रेमपूर्वक सेवा करेंगे।

   (ख) जो साधक यथा अवकाश आश्रम में रहकर स्वयं साधन सीख कर अपने देश में जाकर दूसरों को भी अपने अनुभव से लाभ पहुंचाते हुये प्रचार करेंगे।

   (ग) जो आश्रम में आकर साधनों से स्वयं लाभ उठायेंगे।
4. प्रत्येक साधक को अपने खर्च का प्रबन्ध आप करना होगा।
5. रोगी साधक को अपने रोग निवारणार्थ कम से कम एक मास रहने का प्रबन्ध करके आना चाहिए, किन्तु जो भगवद्भक्ति, मानसिक शान्ति के लिए योग के अन्तरंग साधन करना चाहते हों उनको श्री गुरु जी के ही विचार पर सदा निर्भर रहना होगा।

6. प्रत्येक साधक को अपनी दिनचर्य्या तथा रात्रिचर्य्या (टाईम टेबल) श्री गुरु जी की आज्ञानुसार नियत करनी होगी।

7. योग चिकित्सा से चिकित्सित होने वाले साधक को अपने चिकित्सा काल के अन्दर किसी भी डाक्टर, वैद्य या हकीम की दवाई खाना निषिद्ध है।

8. यदि कोई साधक अन्य साधकों के किसी साधन को देखकर बिना अनुमति स्वयं उन साधनों को करेगा तो उस से लाभ, हानि का जिम्मेदार वह स्वयं होगा और आश्रम के आचार्य के अनुशासन का भी भागी होगा।

9. 20 वर्ष से कम आयु वाले को उसके संरक्षकों की सम्मति से प्रविष्ट किया जाएगा।

10. स्त्रियों को सम्बन्धियों के साथ आना चाहिए या वृद्धा स्त्री को, जो संरक्षक हो, साथ लाना चाहिए।

11. साधकों को जो भी कोई उपासना या साधन दिया जावे उसे नित्य नियम पूर्वक करना होगा और आचार्य जी की आज्ञा के बिना अन्य कोई मनमानी नूतन उपासना या धारणा नहीं करनी होगी।

❖❖❖❖